मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

जून २००७ ▸ वर्ष ५७ ▸ अंक ६

सम्मेलन के यादगार क्षण

१

२

(१) भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह जी शेखावत की ३१ मई २००७ को कोलकाता यात्रा के दौरान सम्मेलन के सभापति श्री सीताराम शर्मा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने राजभवन में उनसे मुलाकात की। इस अवसर पर 'चिन्तन के कुछ क्षण: प्रसंग मारवाड़ी समाज' पुस्तक का विमोचन भी किया गया।' प्रतिनिधि दल में महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, पूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, संयुक्त मंत्रीद्वय- श्री अरुण गुप्ता, श्री रवि लड़िया, प. बंग. प्रांतीय सम्मेलन अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया एवं श्रीमती सुमन गुप्ता शामिल थे।

(२) भारत के राष्ट्रपति पद के लिये कांग्रेसी उम्मीदवार श्रीमती प्रतिभा पाटिल २००५ वर्ष में राजस्थान की राज्यपाल के रूप में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यक्रम में पधारी। उक्त चित्र में श्री सीताराम शर्मा स्वागत करते हुये, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्रीमती पाटिल एवं श्री मोहनलाल तुलस्यान।

सम्मेलन की नयी शाखा : 'दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन'
पवन गोयनका तदर्थ समिति संयोजक नियुक्त

पवन गोयनका

राष्ट्रपति डॉ. कलाम की समाज विकास को शुभकामना

The President of India, Dr. A.P.J. Abdul kalam, is happy to know that All India Marwari Federation, Kolkata is bringing out its Magazine 'SAMAJ VIKAS'.

The President extends his warm greetings and felicitations to all those associated with the Federation and wishes the Magazine all success.

PRESS SECRETARY TO THE PRESIDENT

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance infrastructure. And there are Companius that also finance dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solutions. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistently acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

समाज विकास
जून, 2007
वर्ष 57, अंक 6
एक प्रति - 10 रु.
वार्षिक - 100 रु.
संपादक : नंदकिशोर जालान
सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

समाज विकास

1. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
2. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
3. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
4. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
5. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
6. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
7. भारत के कोने-कोने में फैले हुए 9 करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
8. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, 152-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-7, फोन : 2268-0319 के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा छपते छपते, 26-सी क्रीक रो, कोलकाता-700014 में मुद्रित।

राजस्थान केवल देवी-देवताओं के आगे माथा टेकने की जगह नहीं

-भैरोंसिंह शेखावत

(देखें पृष्ठ 15 में)

क्रमांक

चिट्ठी आई है — पृष्ठ 4-5
कवितायें — पृष्ठ - 6
संपादकीय — पृष्ठ - 7
महेश नवमी — पृष्ठ - 8
अध्यक्षीय — पृष्ठ - 9
नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी — पृष्ठ - 10
शिक्षा का आलोक — पृष्ठ - 11
नो न्यूज - व्यंग्य — पृष्ठ - 12
राजस्थान फाउंडेशन — पृष्ठ - 13-16
मारवाड़ी जहां जाते हैं — पृष्ठ - 17-18
गोयनका हवेली — पृष्ठ - 19-20
श्रीमंत शंकर देव की वाणी — पृष्ठ - 21-22
श्रीमती प्रतिभा अग्रवाल — पृष्ठ - 23
संयुक्त परिवार — पृष्ठ - 24
जैमिनी कौशिक बरुवा — पृष्ठ - 25-26
नैतिकता का... — पृष्ठ - 27
कुण्डलिया फाउंडेशन — पृष्ठ - 28
राणाप्रताप जंयती — पृष्ठ - 29
राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार — पृष्ठ - 30
युगपथ चरण — पृष्ठ - 31-34

चिट्ठी आई है

'समाज विकास' नई प्रगति करता रहे

'समाज विकास' मई अंक मिला, हार्दिक प्रसन्नता हुई। अंक बहुत ही सुन्दर है तथा प्रकाशित सामग्री विचारोत्तेजक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। सम्पादकीय में यह पढ़कर गहरी पीड़ा हुई कि समाज के कतिपय लोग कहीं-कहीं पर जन कल्याण हेतु स्थापित संस्थाओं को बेचकर उसका व्यवसायीकरण कर रहे हैं। उपरोक्त कार्य बिल्कुल निन्दनीय है एवं इसका प्रबल विरोध सम्मेलन के माध्यम से होना चाहिए। अध्यक्षीय में मारवाड़ी जनगणना के बारे में व्यक्त विचार बहुत ही सुन्दर है। सचमुच अगर प्रत्येक प्रदेश में जिलावार जनगणना करवा कर पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवायी जाय तो वह समाज के लिए दिशा-निर्देशक साबित होगी। श्री राम अवतार पोद्दार का आलेख युवा पीढ़ी की वर्तमान स्थिति को रेखांकित करता हुआ उसे आत्म परिष्कार करने का संदेश देता है। मारवाड़ी समाज को दूध में शक्कर की तरह बतलाकर माननीय शर्मा जी ने इसकी समरसता को उजागर किया है जो स्वागत योग्य है। दोनों लघुकथायें बहुत ही सुन्दर एवं हृदयस्पर्शी हैं परन्तु लेखक का नाम नहीं दिया जाना खटकता है। कन्या भ्रूण हत्याओं से संबंधित आलेख पठनीय एवं मननीय हैं। 'समाज विकास' नई प्रगति करता रहे और सामाजिक चेतना का अलख जगाता रहे, हार्दिक अभिलाषा है।

-**युगल किशोर चौधरी,** चनपटिया (बिहार)

---

10 मई का लिखा पत्र तथा समाज विकास का अप्रैल अंक प्राप्त हुआ। देखा, बहुत अच्छा लगा। मेरे जन्म दिन पर आपने आशीर्वाद भेजा वह मेरे लिए मूलधन है। शतायु का जीवन तो कष्टप्रद होता है फिर भी जब तक इश्वर काम लेना चाहेगा, हिम्मत के साथ करेंगे। मारवाड़ी सम्मेलन की छत्तीसगढ़ इकाई के साथ हमारा पूर्ण सहयोग है। साथ ही मारवाड़ी युवा मंच के लिए भी मारवाड़ी सम्मेलन के द्वारा प्रकाशित साहित्य मेरे लिए प्रेरणादायी रहा है।

-**हरप्रसाद अग्रवाल,** गीता प्रेस, रायपुर

कथनी और करनी में बहुत बड़ा अन्तर

सम्मेलन के द्वारा वैवाहिक आचार संहिता के 9 सूत्र पारित किये हैं। मेरा मानना है कि इसे पारित करना तदुपरांत इसे मात्र अपनी ही पत्रिका में प्रकाशित कर देना काफी नहीं होगा, जरूरी है इसे लागू करना।

आज के समय **कथनी और करनी में बहुत बड़ा अन्तर है** और कथनी को करनी में बदलना है तो इसकी शुरूआत अपने से करना होगा तब ही कहने का भी हक बनेगा। अत: सम्मेलन के उच्चवरीय पदाधिकारी तथा कार्यकारिणी सदस्य इसकी शुरूआत करे जिसका प्रकाशन समाज विकास पत्रिका में किया जाय तथा अन्य जो लोग इस आदर्श आचार-संहिता को मान्यता देते हैं उनका विवरण इस पत्रिका में प्रकाशित हो तथा उन्हें विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाय ताकि यह आचार-संहिता एक आन्दोलन का रूप ले सके तथा समाज की कुरीतियों/दिखावा तथा उसी के देखा-देखी जो आडंबर बढ़ रहा है उस पर अंकुश लग सके। **कहावत भी है "chairty begens at home" मात्र बात या संदेश देने मात्र से समाज का भला नहीं होगा।**

-**श्रवण देबुका**
जुगसलाई, जमशेदपुर-6

सादर नमस्कार। आपने 'समाज विकास' अप्रैल 2007 का अंक प्रेषित कर बड़ा प्रशंसनीय कार्य किया है। अंक देखकर पता चलता है कि आप में अभी भी सामाजिक कामों में वही उत्साह बना हुआ है, जो युवावस्था में रहा होगा। अगर आप 'समाज विकास' का अंक प्रति माह भेजते रहें तो मेहरबानी होगी।

-**केशरीकांत शर्मा 'केसरी'**
आनन्दपुरा, वार्ड नं. 20, पोस्ट : मण्डावा
जिला-झुंझुनूँ-333704 (राजस्थान)

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

क्या समाधान होना चाहिए ?

मैं समाज विकास पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। मई 2007 के अंक में सम्पादकीय में "**क्या समाधान होना चाहिए**" में एक बहुत उपयुक्त विषय का चुनाव किया है। और मैं अपने विचार प्रस्तुत करने से रोक नहीं पा रहा हूँ।

पुरानी धार्मिक संस्थायें धनाभाव के कारण अपनी उपयोगिता नहीं रख पा रही है। इनमें अधिकांश धार्मिक प्रतिष्ठान उन मारवाड़ी परिवार द्वारा स्थापित है जो आज स्वयं आर्थिक स्थिति से कमजोर हो चुके और वे ऐसी अवस्था में नहीं है कि इन संस्थाओं का संचालन कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में एकमात्र उपाय है इन संस्थाओं को यथास्वरूप अन्य धार्मिक संस्थाओं को बेच देना चाहिए। इस प्रकार पुराने उद्देश्य को कायम रखा जा सकता है। **इस क्रय-विक्रय की स्थिति में पुराने उद्देश्य में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए। यथा कोई धर्मशाला है तो भविष्य में भी धर्मशाला रहनी चाहिए न की उस स्थान पर दूकानें या निजी निवास स्थान बने।** इसी प्रकार शिक्षालय, चिकित्सालय आदि। जहाँ तक पुराने विक्रेता का प्रश्न है निश्चित रूप से उसे कुछ लाभ होगा। इसके लिए यह नियम कियाजा सकता है कि आय का कम से कम 50 प्रतिशत भाग उसे पुनः धार्मिक-सामाजिक कार्यों में व्यय करना होगा अन्यथा उसके द्वारा बेची गयी पुरानी धार्मिक संस्थायें अयोग्य घोषित की जायेगी। आप देखें एक तरफ पुरानी चीजों का पुनः निर्माण होगा और विक्रय करके जो लाभ होगा उसका एक अंश नये रूप में सामाजिक कार्य में प्राप्त होगा। अर्थशास्त्र का यह नियम है हमेशा capital का circulatity होना चाहिए। धार्मिक प्रतिष्ठानों में जो capital invested है उसका भी circulation पुनः धार्मिक काम में होना चाहिए। इस नियम से विस्तार होगा अन्यथा पुरानी चीजें धीरे-धीरे एकदम नष्ट हो जायेगी।

> *इस क्रय-विक्रय की स्थिति में पुराने उद्देश्य में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए। यथा कोई धर्मशाला है तो भविष्य में भी धर्मशाला रहनी चाहिए न की उस स्थान पर दूकानें या निजी निवास स्थान बने।*

-विश्वनाथ टांटिया
4, शरत चटर्जी एवेन्यू, कोलकाता-29

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

अंधविश्वास

–ओम लड़िया

एक अच्छा–खासा युवक जिसकी आमदनी 5000/- मासिक थी अपने बॉस से गिड़गिड़ा रहा था कि उसके पिता की गाँव में अकस्मात निधन हो गया है और इस संबंधी संस्कार के लिए उसे एक लाख रुपया एडवांस चाहिए। उसको पूरे गाँव में बिरादरी भोजन, गो-दान, ब्राह्मण भोजन, शय्यादान, चाँदी के बर्तन, सोने के आभूषण आदि-आदि काफी खर्च करना है - नहीं करने से गांव वाले मुझे कोसते रहनेंगे कि बड़ा निकम्मा निकला, अपने पिता की मृत्यु पर कुछ भी नहीं किया। शहर में रहता है।

संयोगवश उस समय मैं भी वहां उपस्थित था और उस युवक की अज्ञानता, अंधविश्वास पर तरस खा रहा था। माफी चाहते हुए उस युवक को मैं समझाना चाहा कि आप हम मृतक के नाम पर जो कुछ भी करते हैं उसका मरने वाले से कोई संबंध नहीं है। उसको कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। हमें गुमराह कराया जाता है और हमारे जहन में डर भर दिया जाता है। **गरुड़ पुराण** में सिर्फ दान देने और डराने वाली बातें ही होती हैं - उनकी सच्चाई तार्किक नहीं है और कोरी कल्पना मात्र है।

मैंने समझाया कि अन्य ज्ञाति, समाज में चालू संस्कार-पद्धति से हमें सिखना चाहिए जहां मृतक के नाम पर न्यूनतम संस्कार किये जाते हैं।

हम भूल-भुलैय्या में मृतक संस्कार के नाम पर जो करते हैं वह भी एक तरह की फिजूलखर्जी या धन की बर्बादी है। दानधर्म के नाम पर जो सामग्री दान स्वरूप दी जाती है वह अगले ही दिन उसी दुकान पर चौथाई मूल्य पर बिक्री हो जाती है - मृतक को तो कुछ नहीं मिलता, हाँ ब्राह्मण और दुकानदार दोनों को ही लाभ पहुंचता है।

भाई मेरे! आप शिक्षित व्यक्ति हैं, एक अच्छे पद पर अधिकारी हैं। आप अंधविश्वास से ऊपर उठकर चली आ रही घिसी-पिटी परम्परा को तोड़ें, साहस से काम लें और आलोचना की परवाह नहीं करें। कुछ दिन बाद आप देखेंगे कि अन्य लोग भी आपका अनुकरण कर रहे हैं और जो आपकी आलोचना करते थे वे ही आपके प्रशंसक हो जायेंगे।

उस युवक के सामने अपने स्वयं का अनुभव प्रस्तुत किया जहां मेरी मां की मृत्यु पर बहुत ही सादगीपूर्ण संस्कार किये। न ब्राह्मण भोजन, न गोदान, न गरुड़पुराण न शय्यादान और न कोई घाट पर श्राद्ध कर्म। अंतिम बारहवें दिन एक छोटा सा संक्षिप्त श्राद्ध, हवन, एक गरीब भिक्षु को एक सेट बर्तन, एक सेट कपड़ा और नकद दक्षिणा - मेरे अपने ही निकटतम 5/6 मौके पर मृतक संस्कार काफी सरलता पूर्वक किया गया था।

ईश्वर को धन्यवाद करता हूँ कि वह युवक मेरी बातों से काफी प्रभावित हुआ और तत्काल ही एक छोटी रकम एडवांस लेकर ही संतुष्ट हो गया।

शंभु चौधरी की दो कवितायें

नि:शब्द जलता रहा

आज
अपने आप को खोजता रहा,
अपने आप में।
मीलों भटक चुका था,
चारों तरफ घनघोर अंधेरा
सन्नाटे के बीच एक अजीब सी
तड़फन जो आस-पास
भटक सी गयी थी।
शून्य! शून्य! और शून्य!
सिर्फ एक प्राण।
जो नि:संकोच, नि:स्वार्थ रहता था
हर पल साथ।
पर मैंने कभी उसकी परवाह न की,
अचानक उसकी जरूरत ने
सबको चौंकना दिया।
चौंका दिया था मुझको भी
पर! अब वह
बहुत दूर, बहुत दूर, बहुत दूर
और मैं जलता रहा नि:शब्द हो आज।

मैं भी स्वतंत्र हो पाता

चलो आज खिड़कियों से कुछ हवा तो आई,
कई दिनों से कमरे में घुटन सी बनी हुई थी।
हवाओं के साथ फूलों की खुशबू
समुद्री लहरों की ठंडक,
थोड़ी राहत, थोड़ा शकुन,
पहुँचा रही थी मेरे मन को शकुन
कुछ पल पूर्व मानो कोई बंधक बना लिया था
समुंदर पार कोई रोके रखा था,
कई बन्धनों को तोड़
स्वतंत्रता के शब्द ताल
बज रही थी एक मधुर धुन।
सांय.....सांय.....सांय.....
मैं नितांत, निश्चित एवं शांत मन से
एकाग्रचित्त हो कमरे के एक कोने में बैठा
हवाओं का लुफ्त उठा रहा था।
काश इन हवाओं की तरह
मैं भी कभी स्वतंत्र हो पाता
अपने - आपसे।

पता : एफ.डी. 453, साल्टलेक सिटी, कोलकाता-700106

संपादकीय

SEZ

भारत एक विकासशील देश है, और यहां की 80% आबादी की आय कृषि आधारित है। देश के कई भाग आज भी सड़क-पानी से अछूते हैं। कच्ची सड़कों का सफर अभी इतना लम्बा है कि उसे नापते-नापते बच्चों के पांव थक जाते हैं। रोजाना पांच-पांच किलोमीटर पैदल का सफर रास्ते में नदी-नाले को तैर - पार कर गांवों में बच्चे अभी भी स्कूल जाते देखे जा सकते हैं। हर साल सैकड़ों किसान फसल के नुकसान से आत्महत्या करने को लाचार हो जाते हैं। परन्तु भारत के अर्थशास्त्री इस आंकड़े को न तो अब तक समझ पाये और न ही वे इस पर कभी कोई कार्य ही किया। विदेशी पुस्तकें पढ़, अर्थशास्त्र की मानद उपाधि लेकर संसद भवन में बैठे-बैठे भारत की आर्थिक कल्पना भले ही उन्हें सार आती हो परन्तु इनकी ऐसी अर्थनीति से कभी भी भारत का भला नहीं हो सकता।

एक बात मुझे याद आती है कि जब कोई व्यापारी अथवा साहुकार (रुपये ब्याज देने का कारोबारी) जब ऋण देता था, और लेट भुगतान होने पर 3% माह की दर से अतिरिक्त ब्याज के साथ ऋण वापस मांगता था, तो भारतीय बैंक के अधिकारी उन्हें लूटखोर की संज्ञा देते थे। कई अदालतों ने इस पर कड़ी से कड़ी टिप्पणियां तक कर डाली। परन्तु आज खुलेआम सरकारी बैंकों द्वारा इस तरह का काम किया जा रहा है। 50 रुपये खाते में कम होने पर 500 रुपये का दण्ड चार्ज कर लेते हैं। ऋण अग्रिम भुगतान कर देने पर उस पर 4.5% अग्रिम भुगतान चार्ज तक लिया जाता है। 3% लेट भुगतान यह सब अब क्या कर रहे हैं ? वे साहूकार लूटखोर थे, जब बैंकों का ब्याज दर 18% सालाना था, आज 9% सालाना है तो इनको इस तरह के कार्यों को उसी भाषा में, जिस भाषा में बैंकों के अधिकारी या अदालतों की उन टिप्पणियों को सामने रख कर कहा जाए तो ये क्या कहे जायेंगे ? परन्तु इनके इन कृत्यों पर कोई लगाम नहीं है। ना ही भारतीय रिजर्व बैंक और न ही अदालत यदि वे लोग गलत थे तो इनके कार्यों को क्यों नहीं कटघरे में खड़ा किया जा सकता ? कानून यही है तो कहाँ है ? आज इनकी नैतिकता क्या बोलती है। वे कारोबारी अनपढ़ थे, और अनपढ़ों से काम करते थे, परन्तु आज ये लोग पढ़े-लिखे हैं और पढ़े-लिखों से ब्याज, अनैतिक चार्ज वसूल करते हैं। मेरा कतई ध्येय उन व्यवस्था को सही ठहराना नहीं है, यदि वे लोग गलत थे तो इनके कार्यों का आंकलन भी हमें करना चाहिए।

स्पेशल इकोनोमिक जोन के नाम पर किसानों की उपजाऊ जमीनों को सरकार औने-पौने दामों में अधिग्रहण कर बड़े-बड़े उद्योगपतियों के हाथों में बेच रही है। गाँव का गाँव खाली कराया जा रहा है। हर प्रांत की सरकारें इस दौड़ में लगी हुई है। जमीन अधिग्रहण कानून जनता की सुविधा के लिए बनाया गया था कि यदि सरकार को चाहिए तो वह **जन कार्य हेतु जमीनों का अधिग्रहण कर सकती है** परन्तु व्यापार करने के लिए या किसी व्यापारिक कार्य के लिए इस कानून का प्रयोग सरासर धोखा है। देश की जनता के साथ ही नहीं कानूनी दृष्टि से भी धोखाधड़ी का मामला बनता है। सरकार को न सिर्फ इन बातों पर विचार करना चाहिए साथ ही सरकार इस बात पर भी विचार कर संसद में बिल लाये कि छोटे-छोटे किसान, मजदूर, सब्जी विक्रेता, अन्य खाद्य सामग्री विक्रेता के हित को अनदेखा कर मॉल या डिपार्टमेंटल स्टोर नहीं खोले जा सकते हैं। सवाल कुछ है तो वह सिर्फ इतना ही कि किसी की रोजी-रोटी छीन कर किसी भी व्यापारी को कार्य नहीं करने दिया जाये। भले ही वह कितना ही बड़ा व्यापारी या SEZ का मामला ही क्यों न हो। हाथ या मशीनों से बने खाद्य पदार्थों को छोड़कर अन्य किसी भी प्रकार के खाद्य-पदार्थों जैसे-सब्जी, फल, आटा-दाल, चीनी, नमक का कारोबार बड़े उद्योगपति को करने का अधिकार कदापि नहीं दिया जाना चाहिए। यह व्यवस्था समाज में दरार पैदा कर सकती है जिसके परिणाम घातक हो सकते हैं।

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

माहेश्वरी समाज की संगठित शक्ति का प्रतीक

महेश नवमी पर्व

रमेश कुमार बंग, अध्यक्ष : आन्द्रप्रादेशिक माहेश्वरी सभा

यद्यपि वृहत्तर राजपुताना ऐसे अनगिनत घटनाक्रमों को अपनेआप में समेटे हुए हैं, जो भारत के प्राचीन इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठों के रूप में टंकित हैं तथापि **श्री महेश नवमी पर्व** उनमें अति विशिष्ट है क्योंकि इसका सम्बन्ध राष्ट्रीय महत्त्व और आवश्यकता से सीधा जुड़ा हुआ है। माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति के ज्ञात इतिहास और जनश्रुति अनुसार श्री महेश नवमी के दिन ही 72 क्षत्रिय उमरावों ने भगवान शिव की प्रेरणा से क्षत्रिय कर्म त्याग कर वैश्य कर्म अंगीकार किया। भगवान महेश के नाम पर ये 72 क्षत्रिय उमराव माहेश्वरी कहलाए। आज देश ही नहीं विदेशों में भी इन 72 उमरावों की सन्तति आर्थिक केन्द्रों, वित्त और वाणिज्य की धुरी बने हुए हैं। यद्यपि माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति का सिद्धान्त भी अन्य जातीय उत्पत्ति के सिद्धान्तों की भाँति देवीय सिद्धान्त पर केन्द्रित है, तथापि एक वर्ण से दूसरे वर्ण में परिवर्तित होना एक अत्यन्त साहसिक कदम माना जा सकता है। सौद्देश्य वर्ण परिवर्तन करना और उन उद्देश्यों को प्राप्त राष्ट्र निष्ठा और दायित्व निर्वहनशीलता की पराकाष्ठा माना जा सकता है।

माहेश्वरी समाज की गणना देश के विशुद्ध मूल्यों और संस्कृति के पोषक और संवाहक समाजों में की जाती है, यही कारण है कि प्रत्येक माहेश्वरी अपनी जाति पर गर्व करता है। प्रत्येक माहेश्वरी परिवार अपने जात्योत्पत्ति पर्व को पूर्ण श्रद्धा और उल्लासपूर्वक मानता है। जात्योत्पत्ति पर्व को सामूहिक रूप से मनाने की परम्परा भी रही है जो सम्पूर्ण समाज की संगठित शक्ति का प्रतीक माना जा सकता है। समाज द्वारा आत्मचिन्तन करना, अपनी विशिष्टताओं और युग प्रभावजन्य प्रविष्ट विसंगतियों का मूल्यांकन कर सामूहिक रूप से विशिष्टताओं का अग्रसरण और विसंगतियों का निरोध इस पर्व को और भी सार्थकता प्रदान करता है।

राष्ट्रीय जीवन और विकास में माहेश्वरी समाज के योगदान का उल्लेख किए बिना जात्योत्पत्ति पर्व मनाने का उद्देश्य अधूरा माना जायेगा। इसे भगवान महेश की अनुकम्पा ही मानी जायेगी कि इतर समाजों की तुलना में इस समाज की जनसंख्या नगण्य है किन्तु राजनीति, वाणिज्य, वित्त प्रबन्धन, विधि, न्याय, कला, साहित्य, विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में इस समाज का योगदान आश्चर्य चकित करने वाला है। राष्ट्रीय जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जो इस समाज के लिए अछूता हो। यह इस समाज की परिश्रमशीलता, कर्त्तव्य परायणता,कार्यकुशलता, मानसिक एवं बोद्धिक क्षमता और दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचायक है।

माहेश्वरी समाज की प्रकृति मूलतः पाप भीरू है। यह समाज अनैतिकता, अकर्मण्यता, अनाचार, मिथ्या और अन्याय से योजनों दूर है। सेवा,त्याग और सदाचार इस समाज की शिराओं में रक्त बनकर परवाहित होते हैं। फिर भी जात्योत्पत्ति पर्व पर समाज में प्रविष्ट हो चुकी कुरीतियों पर भी दृष्टिपात करना सर्वथा प्रासंगिक है क्योंकि अपनी कमजोरियों को ढूंढ़ना और उनका निराकरण करना ही किसी भी प्रगतिशील समाज की पहचान है। श्री माहेश नवमी के पावन पर्व पर समाज को अपनी कमजोरियों पर सामूहिक रूप से चिन्तन करना होगा। यदि समग्र रूप से देखा जाय तो पूरा देश ही सामाजिक और सांस्कृतिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है और माहेश्वरी समाज भी इससे अछूता नहीं है। प्रायः ये देखा गया है कि भौतिक सम्पन्नता भौतिकतावादी मानसिकता को जन्म देती है, माहेश्वरी समाज को इससे विशेष रूप से सावधान रहने की आवश्यकता है। भौतिक समृद्धि को प्राप्त करना माहेश्वरी समाज का जातिगत गुण है और आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक संरक्षण आराध्योपासना है, इसको ध्यान में रखकर हमें अपनी जीवन सैली का निर्धारण करना होगा, तभी हम अपने सर्वांग मुखी विकास को प्राप्त करने में सफल हो पायेंगे।

अर्थोपार्जन और लोकमंगल करना माहेश्वरी समाज का प्रधान व्यसन रहा है, शेष अहितकर व्यसन कभी भी माहेश्वरी समाज में स्वीकार्य नहीं रहे। हमारा समाज इससे अप्रभावित रहे, इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने परिवारिक जीवन को परिष्कृत बनाए रखें। विगत कुछ समय से हमारे समाज में आडम्बर की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, इस पर अंकुश लगाना नितान्त आवश्यक है, अन्यथा कालान्तर में हमें अनेकानेक समस्याओं का सामना तो करना ही पड़ेगा, साथ ही हमारी सामाजिक एकता भी छिन्न-भिन्न हो जायेगी। अतः समाज को सावधान रहने की जरूरत है। भ्रूण परीक्षण और भ्रूण हत्या की जघन्य पापवृत्ति से समाज को सर्वथा दूर रहना होगा।

श्री महेश नवमी पर्व समानता और बन्धुत्व का पर्व है, अतः समाज में समता और बन्धुत्व भाव को और भी अधिक सजगता से विकसित करना होगा। पारस्परिक सहयोग और प्रोत्साहन से एक दूसरे के स्वाभिमान को सुरक्षित रखने के प्रयासों को प्राथमिकता प्रदान करना जात्योत्पत्ति पर्व का प्रधान संदेश है। भगवान महेश से प्रार्थना करता हूँ कि सम्पूर्ण समाज संगठित, विकसित, उन्नत और सम्पूर्ण रूप से समृद्धशाली हो, देश के सभी समाजों में परस्पर सद्भाव और एकता स्थापित हो, देश का प्रत्येक नागरिक सुखी और समृद्धिशाली हो और भारतवर्ष पुनः अपने प्राचीन गौरवशाली सिंहासन पर आरूढ़ हो। सभी को श्री महेश नवमी पर्व शुभमंगलकारी हो।

अध्यक्षीय

कृपया विवाहों में सादगी बरतें

प्राय: लोग यह प्रश्न करते हैं कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन समाज सुधार की गाड़ी को कैसे आगे बढ़ायेगा। '**चिन्तन शिविर**' आयोजित कर उसमें एक सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक आचार संहिता पारित की गयी यह तो स्वागत योग्य है लेकिन इसे लागू कैसे किया जायेगा। अलग अलग विचार है। कुछ का मानना है कि जब तक समाज पर दबाव नहीं बनाया जायेगा तब तक कुछ नहीं होगा। ऐसा नहीं कि इस प्रश्न पर चिन्तन शिविर से विचार विमर्श नहीं हुआ हो। काफी बातचीत हुई। बराबर की तरह गरमपंथी व नरमपंथी आन्दोलन एवं प्रदर्शन की वकालत कर रहे थे। उनका कहना था ''**भय बिनु होय न प्रीति।**'' उनका यह भी कहना था कि प्रत्येक सुधार के लिये समाज को लड़ाई लड़नी पड़ती है, विरोध का सामना करना पड़ा है, चाहे वह पर्दा प्रथा हो या बालिका शिक्षा का सवाल हो। जब तक जोरदार धमाका नहीं होगा समाज के कान से जूं नहीं रेंगेगी।

जबकि नरमपंथी इस सोच के एकदम विरुद्ध थे। उनका कहना था समाज सुधार का मतलब ही है सोच में सुधार- विचार परिवर्तन। उनके अनुसार आन्दोलन एवं प्रदर्शन के परिणाम पिछले दिनों शुभ नहीं रहे- इनका दुरुपयोग किया गया। प्रत्येक समाज का अपना एक विशिष्ट चरित्र होता है। मारवाड़ी समाज जोर-जबर्दस्ती, हिंसा, प्रर्दशन-आन्दोलन, विरोध एवं आक्रोश की भाषा का कभी हामी नहीं रहा है। यह समाज बराबर आपसी बातचीत, वार्तालाप एवं भाईचारे की भाषा को प्राथमिकता देता है। नरम पन्थियों का यह भी कहना था कि जोर-दबाव में हुआ परिवर्तन अल्पकालीन होता है। मतभेद में भी हम मन-भेद नहीं होने देते । इसलिये नरमपन्थी मन-परिवर्तन की वकालत कर रहे थे।

एक सर्वमान्य निर्णय हुआ कि सम्मेलन प्रदर्शन एवं आन्दोलन की बजाय फिलहाल प्रचार-प्रसार एवं बातचीत के जरिये समाज को वैवाहिक समाज सुधार के लिये राजी करे। एक न्यूनतम आचार संहिता पारित की गयी। ऐसा नहीं है कि इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। समाज में आचार संहिता के विभिन्न प्रस्ताव पर एक स्वस्थ वाद-विवाद चल रहा है। आमतौर पर इसका स्वागत किया गया है। कुछ प्रावधानों के सम्बन्ध में आशंकाएं भी व्यक्त की गयी है। नये सुझाव भी प्राप्त हो रहे हैं। लेकिन सभी एकमत है कि मारवाड़ी समाज विवाह-समारोहों में फिजूलखर्ची, दिखावा एवं प्रदर्शन करता है जिससे न केवल समाज की तस्वीर बिगड़ती है साथ ही समाज का मध्यम एवं निम्न वर्ग इसमें पीस रहा है। सभी स्वीकार करते हैं कि सुधारों की आवश्यकता है केवल कही न कहीं शुरूआत करने की बात है।

कुछ लोगों का कहना है कि आचार संहिता एवं अपीलों से कही कुछ नहीं होना है। मैं आदर सहित उनसे असहमत हूँ। मेरी अपनी धारणा है कि इसका एक प्रभाव होता है। मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि पिछले एक-दो वर्षों में किये गये अभियान से कि विवाहों में निमंत्रण कार्ड सादगीपूर्ण हो , का प्रभाव दिखाई पड़ रहा है। इस बार कुछ कार्ड 'बड़े' विवाहों के लिए जो प्राप्त हुए हैं वे अपेक्षाकृत सादगीपूर्ण है।

समाज सुधार एक निरन्तर प्रक्रिया है। इसका प्रभाव देर से भले हो लेकिन यह सुधार दीर्घकालीन होगा और स्थायी भी। हमें मिल जुलकर इस प्रयास को जारी रखना है। निराशा का कोई स्थान नहीं है। निर्माण से अधिक परिवर्त्तन कठिन होता है।

एक बार फिर शादी-विवाह का पर्व आरम्भ हो रहा है। हम पुन: समाज से अपील करते हैं कि समाज के हित में ''कृपया विवाह-समारोहों में सादगी बरतें।''

आपका

(सीताराम शर्मा)

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

नई और पुरानी पीढ़ी के बीच सेतु बनाने की जरूरत

गौरी शंकर कायां

समाज विकास ने बरबस मेरा ध्यान आकर्षित किया। 12वीं के परीक्षा परिणामों में मारवाड़ी छात्र-छात्राओं ने अव्वल स्थान प्राप्त किए। नेहा मुरारका ने 96% अंक प्राप्त किए वहीं प्रशंसा जीवराजका ने दो अलग-अलग विषयों में 99% अंक प्राप्त किए। इन समाचारों से मारवाड़ी समाज में शिक्षा के गुणात्मक विकास, विशेषकर लड़कियों में, का संक्षिप्त परिचय मिलता है। ऐसी और भी बहुत सी छात्राएँ हैं और छात्र भी जो शिक्षा के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा से नये कीर्तिमान स्थापित कर समाज और परिवार का मान बढ़ा रहे हैं।

यह मारवाड़ी समाज के शिक्षा क्षेत्र में अग्रगति का एक सकारात्मक पहलू है जिस पर हमें गर्व होना चाहिए। इसी कोलकाता में आज से महज तीस-चालीस साल पहले तक मारवाड़ी समाज शिक्षण संस्थानों के निर्माण में तो अग्रणी थे। पर स्वयं के शिक्षा को लेकर संकीर्ण। तब व्यापार-वाणिज्य के उपयुक्त कामचलाऊ शिक्षा प्राप्त कर लेना ही अधिक प्रचलित था।

वक्त के साथ देश-विदेश के लोगों में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्र में जो बदलाव आए हैं मारवाड़ी समाज में भी भागीदारी बढ़ी है।

आज के समाज की बीते कल से तुलना करें तो हम पाते हैं कि बदलाव की आंधी में हमारे समाज में अगर कुछ सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं तो बहुत से नकारात्मक प्रभाव भी समाज में परिलक्षित हो रहे हैं।

व्यवसायिक दृष्टि से समाज में नई चेतना का विकास हुआ है। परंपरागत व्यवसाय के साथ-साथ नये क्षेत्रों में लोग प्रवेश कर रहे हैं और सफल भी हो रहे हैं। सूचना-तकनीक और आधुनिक प्रायोगिकी के क्षेत्र में मारवाड़ियों के पदार्पण से आने वाले दिनों में एक नई तस्वीर उभरने की आशा है। हालंकि यहां यह इंगित करना भी जरूरी है कि व्यवसाय में आनेवाली अड़चनों, बाधाओं से घबराकर बहुत से युवा नौकरी को तरजीह देने लगे हैं जो एक व्यवसायिक प्रकृति के समाज के लिए चिन्ता का विषय है।

एक समय था जब मारवाड़ी समाज व्यापार-वाणिज्य के समानांतर साहित्य-संस्कृति के विकास में भी प्रमुख भूमिका निभाते थे। उत्कृष्ट पुस्तकों का प्रकाशन, साहित्य-चर्चा, संस्कृति को लेकर बहस आदि करने में मारवाड़ी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी होते थे संस्थाओं के आयोजन में जाने को लोग उतावले रहते थे। संसद में तो भारत के राष्ट्रीय स्तर के रचनाकारों का निरन्तर आना-जाना था। मेरी साहित्यिक अभिरूचि के उत्स में भी संसद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कालांतर में भारतीय भाषा परिषद में भी कुछ समय तक स्तरीय कार्यक्रम होते रहे। पर अचानक जैसे इन सब पर विराम लग गया है। हर साल दर्जनों बड़े और सैकड़ों छोटे-मोटे संत कोलकाता आते हैं और हजारों की संख्या में लोग इनके प्रवचनों में शरीक होते हैं। लेकिन साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों में लोग श्रोताओं-दर्शकों को तरस जाते हैं। आज कोलकाता में रहकर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित समाजसेविका डा. श्रीमती शारदा फतेहपुरिया, उपन्यासकार डा. प्रभा खेतान, मधु कांकरिया उपन्यासकार अलका सरावगी आदि को मारवाड़ी समाज ने कितना सम्मान दिया है। सामाजिक क्षेत्र में सक्षम नेतृत्व का घोर अभाव है। सामाजिक संस्थाओं में नई पीढ़ी की रूचि एकदम नहीं के बराबर है। जो नेतृत्व है वह पुरानी पीढ़ी का है जिसके पास आधुनिक दृष्टिकोण का अभाव है। अधिकांश लोग सामाजिक संस्थाओं में पदों से चिपके बैठे हैं और इसे आत्मप्रचार का माध्यम बना रखा है।

ऐसे में ऐसी कड़ी का होना बहुत जरूरी है जो समाज के नये और पुराने की दूरी को कम कर सके। अन्यथा विसंगति की यह स्थिति सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर देगी और तब सिवाय पश्चाताप के कुछ भी हाथ नहीं आने वाला। आज जरूरत ऐसे लोगों की है जो प्राचीन गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए नई आवधारणाओं को आत्मसात करें एवं समाज के समक्ष आनेवाली हर चुनौती का सामना करने को तत्पर होकर भविष्य के सुदृढ़, सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित समाज की नींव मजबूत करें।

-7, लायंस रेंज, कोलकाता-1

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

शिक्षा का आलोक फैलाएं, समाज में नवचेतना लाएँ

राम अवतार पोद्दार

मारवाड़ी समाज हमेशा से धर्म के प्रति आस्थावान रहा है। धर्म के प्रति इसी आस्थावान के चलते इस समाज के लोगों ने धर्मस्थानों में दिल खोलकर अनुंदान दिया और भवनों, धर्मशालाओं, बावड़ियों एवं मंदिरों का निर्माण करवाया। आप देश के या विदेशों में भी धर्मस्थानों में जाएं तो इस सत्य का दर्शन अनायास ही हो जाता है।

मारवाड़ी समाज के पुरोधाओं ने एक ओर अपनी मेहनत, लगन, ईमानदारी और दूरदर्शिता से जहां व्यापार-वाणिज्य के क्षेत्र में समाज को ठोस आधार प्रदान किया वहीअपनी सभ्यता और संस्कृति को बचाए एवं बनाए रखने के लिए हरसंभव प्रयास किया। इन्हीं प्रयासों के तहत धर्मस्थानों में नवनिर्माम, भग्नावशेषों का जीर्णोद्धार, धार्मिक आयोजनों को प्रोत्साहन, धार्मिक व्यक्तित्वों को अनुदान आदि कार्य शुरू हुए जो बाद में परंपरा का रूप धारण करता गया और मारवाड़ी समाज की पहचान बन गई।

धर्म से ओतप्रोत रूप से जुड़े मारवाड़ी समाज की एक विशेषता यह रही कि कभी भी इस समाज के लोगों ने धर्म को अपनी कमजोरी नहीं बनाया बल्कि धर्म की अच्छाइयों को अपनाकर अपने परिवार और समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करने की पहल करते रहे।

अन्य समाजों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करने की मनोवृत्ति न मारवाड़ी समाज को गौरव प्रदान किया। इस समाज के लोगों ने ऐसे काम हाथ में लिए जो कभी सरकार के भरोसे होना माना जाता था। विद्यालयों, चिकित्सालयों, अस्पतालों के निर्माण की पहल करके इस समाज ने एक नई सामाजिक धारा को जन्म दिया। महानगरों, कस्बों से लेकर सुदूर देहातों तक मारवाड़ी समाज के लोगों ने जनहित के कार्य किये और वह भी नि:स्वार्थ भाव से। इस समाज के लोगों ने जनहित में सदैव देना सीखा।

एक समय मारवाड़ी समाज में प्रतिष्ठा उसी को मिलती थी जो व्यापार-वाणिज्य में नये मुकाम हासिल करने के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में तन-मन-धन से जुड़ता था।

यह निश्चित तौर पर विलक्षण बात है कि धर्म से गहराई से जुड़े इस समाज में रूढ़ियों, कुरीतियों, अंधविश्वासों के विरुद्ध सुधार आंदोलन लंबे समय से चलता रहा है और आज भी जारी है।

सुधार आंदोलनों में मारवाड़ी समाज को चेतना संपन्न बनाया, उसमें नई दृष्टि का विकास किया और आज मारवाड़ी समाज जिस रूप में है उसके निर्माण में इन आंदोलनों की भूमिका को नकारना संभव नहीं।

सुधार आंदोलनों की बागडोर जहां पारिपक्क सामाजिक नेतृत्व ने संभाली थी वहीं इस प्रक्रिया को घर-घर तक पहुंचाने का काम युवाओं ने किया था।

यही किसी भी आंदोलन की सफलता या असफलता सूचक बन जाता है कि इस आंदोलन से युवा किस रूप में जुड़े हैं क्योंकि युवाओं की ऊर्जा व उत्साह का साथ नहीं हो तो कोई भी परिवर्तन संभव नहीं होता।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की मारवाड़ी समाज के सुधार आंदोलनों को शुरू करने तता व्यापक समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया को लागू करने में निर्णायक भूमिका रही है। 1935 से 1980 तक की दीर्घ अवधि में सम्मेलन ने समाज के लिए जो विचार संप्रेषित किये उसका असर इस कदर हुआ कि सामाजिक कुरीतियों, रुढ़ियों और अंधविश्वासों पर काफी हद तक लगाम लग गया। यह नेतृत्व की दूरदर्शिता और युवाओं की सक्रियता का सम्मिलित प्रभाव था।

1980 के बाद से ही जब सामाजिक-सांस्कृतिक जगत में बड़े परिवर्तनों की लहर चली, विदेशी संस्कृति को अपनाने की ओर झुकाव बढ़ा तो वर्षों से चली आ रही परंपराओं को बचाना मुश्किल होता गया क्योंकि चमक-दमक की चकाचौंध में युवा भटक गया एवं सामाजिक स्तर पर ऐसे नेतृत्व का अभाव होने लगा जो विकृति की सच्चाई को तर्कसम्मत ढंग से समाज के समक्ष रख पाता।

नवसंस्कृति की इस बाढ़ ने समाज को स्पष्टत: दो भागों में बांट दिया। साधन सम्पन्न वर्ग ने परिवर्तन की इस हवा में ताल से ताल मिलाकर शिक्षा, व्यवसाय व पेशा में नई ऊंचाइयों को हासिल करने में सफलता पाई तो साधनहीन वर्ग अपनी असफलताओं से घबराकर कुंठाग्रस्त हो गया। चुनौतियों से लड़ने की मानसिकता विकसित न कर पाने की वजह से मारवाड़ी समाज का एक बड़ा वर्ग धर्मभीरू होता गया।

आज मारवाड़ी समाज की धर्मभीरूता एक नई विकृति के रूप में सामने आ रही है। धार्मिक आयोजनों की बाढ़ और उसके आयोजन में चमक-दमक की आभा किसके बल पर कायम है ? संतों को बुलाने की होड़ाहोड़ी किस समाज के लोगों ने मचा रखी है ? बड़े धार्मिक आयोजनों में खर्च होने वाली रकम का जुगाड़ कौन कर

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

रहा है ?

–मारवाड़ी समाज। मारवाड़ी समाज।

मुझे बड़ा ताज्जुब होता है जब मैं देखता हूँ कि युवाओं की टोली धार्मिक आयोजनों के लिए चंदा उठाने में पसीना बहाती है।

मेरी नजर में मारवाड़ी समाज के लिए धर्म के प्रति आस्था रखना तो शुभ है लेकिन धार्मिक उन्माद के प्रदर्शन में समय, धन व ऊर्जा गंवाना अशुभ है। वास्तविकता यह है कि धर्म काल्पनिक आनंद तो प्रदान कर सकता है हकीकत में सुख के साधनों का इंतजाम नहीं कर सकता क्योंकि उत्पादकता से धर्म का कहीं कोई संबंध नहीं है जबकि जीवन उत्पादकता के नियमों पर चलता है। आज मारवाड़ी समाज में इस बात को प्रचारित-प्रसारित करने की बड़ी जरूरत है। एक ओर हमें धार्मिक उन्माद को रोकना है तो दूसरी ओर साधनहीन वर्ग के समक्ष सही विकल्प भी प्रदान करना है।

सही विकल्प यह है कि शिक्षा के अवसर बढ़ाए जाएँ और सम्मेलन इस दिशा में ठोस कदम लेकर आगे बढ़ चुका है।

सम्प्रति सम्मेलन ने मारवाड़ी सम्मेलन हायर एजुकेशन फाउंडेशन की स्थापना की है जिसके माध्यम से जरूरतमंद छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप व पढ़ाई खर्च प्रदान करने की प्रक्रिया तो वर्षों से चल रही है लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन द्वारा उठाया गया यह कदम क्रांतिकारी साबित होगा, इसमें कोई शक नहीं बशर्ते समाज के लोग इसकी उपादेयता को प्रचारित करके नवचेतना के संचार में अपनी भूमिका निभाएं।

●

व्यंग

"नो न्यूज इज गुड न्यूज"

–यज्ञ शर्मा

क्या आपके पास कोई समाचार है ? अगर है, तो टीवी को उसकी जरूरत है। वैसे तो टीवी के पास बहुत कुछ है- चैनल है, समाचार वाचक है, रिपोर्टर है, कैमरामैन है। पर, वहाँ आए दिन एक चीज की कमी महसूस होती है-समाचार। अगर, आपके पास कोई समाचार हो तो टीवी वालों को बता दीजिए, वे लोग आपका बहुत अहसान मानेंगे।

क्या आपके पास कोई समाचार है ? कोई फड़कती हुई चीज ? हर चैनल रोज कोई ऐसी चीज खोजना चाहता है जिससे वह अपना घंटे भर का बुलेटिन भर सके। एक बुलेटिन भर गया तो समझो दिन सफल हो गया। फिर , उस समाचार को हर बुलेटिन में बार-बार दिखाया जा सकता है। जिस बात में आधे मिनट का भी मैटर न हो, उसे घंटाभर खींचा जा सकता है। चौबीसों घंटे दिखाया जा सकता है। सफल समाचार वाचक वह माना जाता है जो एक मिनट के समाचार को एक घंटे का उपन्यास बना दे।

क्या आपके पास कोई समाचार है ? अरे रे, यह सवाल सुन कर आप परेशान मत होइए। आपके पास कोई समाचार नहीं है तो जाने दीजिए। कोई बात नहीं। पर, क्या आपके पास कोई चुटकुले है ? आजकल समाचार में चुटकुले भी चलते हैं। हिन्दी समाचार चैनल हिंदी कवि सम्मेलनों की राह पर चल पड़े हैं। ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन उनकी हालत हिन्दी कवि सम्मेलनों जैसी हो जाएगी। कुछ समय पहले उनकी हालत हिन्दी कवि सम्मेलनों में कविता होती थी और बीच-बीच में चुटकुले आ जाते थे। अब चुटकुले होते हैं। बीच में ही कविता आ जाए तो कविता की किस्मत। आगे चलकर, समाचार चैनलों में भी आपको समाचार मिल जाएं तो अचरज मत कीजिएगा। हिंदी कवि सम्मेलनों में चुटकुले आने में थोड़ा समय लगा था। चुटकुले आने से पहले हास्य कविता आयी थी। टीवी समाचार में सीधे चुटकुले आ गये टीवी चैनल की सफलता टीआरपी से तय होती है। अगर हंसी ने टीआरपी बढ़ा दी, तो आगे चल कर सबसे सफल चैनल किसे माना जाएगा ? जो सबसे ज्यादा हास्यापद होगा।

तो, आपके पास कोई समाचार नहीं है। कोई बात नहीं। चुटकुला भी नहीं है। कोई बात नही। आपके पास अंधविश्वास तो है न ? टीवी समाचारों में अंधविश्वास को भी बड़ा महत्व दिया जा रहा है। बड़े-बड़े लोग कैमरों के सामने अपने अंधविश्वासों का प्रदर्शन कर रहे हैं. देश में अंधविश्वासी जनरल नॉलेज का विकास हो रहा है। लोग बाकायदा सीख रहे हैं कि किस अंधविश्वास के लिए कहां जाना चाहिए ? कहां नहाना चाहिए ? हां टीका लगाना चाहिए ? कितना बड़ा हवन करना चाहिए ? जो लोग अपनी लाइफ स्टाइल में इतने फारवर्ड दिखते हैं, वे लाइफ में कितने बैकवर्ड हो गये हैं ? इतना अंधविश्वास ? वह भी आज के जमाने में ? यह 21वीं सदी ही है न ? या नंबरिंग में कोई गलती हो गयी है। कहीं 12 को 21 तो नहीं लिख दिया गया ? शायद 12 ही सही है। तभी तो नेता जात-पांच में घुस रहे हैं और संभ्रांत लोग अंधविश्वास में। जिन लोगों का काम समाज को दीपक दिखाना था, ने अपनी आंखों पर पट्टी बांध कर घूम रहे हैं ? 21वीं सदी के मुंह पर कालिख मल रहे हैं। और, समाचार चैनल यह सब कुछ समाचार बना कर दिखा रहे हैं।

क्या आपके पास कोई समाचार है ? नहीं है, तो कोई बात नहीं। अंग्रेजी की कहावत है- नो न्यूज इज गुड न्यूज। इसलिए, अच्छा ही हुआ कि आप समाचार बने नहींक्योंकि, समाचार तो आजकल मजाक बन गये हैं। जो लोग आजकल समाचार में हैं, जानते हैं उन्हें देख कर मन में क्या होता है ? जाने दीजिए, बता कर भी क्या फायदा !

(राष्ट्रीय महानगर से साभार)

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

राजस्थान फाउंडेशन

खुश हूँ नयी पीढ़ी समाज का गौरव बढ़ा रही है : डॉ. सरला बिरला

राजस्थान फाउंडेशन की तरफ से उपराष्ट्रपति ने किया डॉ. सरला बिरला को प्रवासी प्रतिभा सम्मान से सम्मानित

आजकल जो अस्पताल और विद्यालय खुल रहे हैं, वे सच्चे अर्थों में स्कूल व अस्पताल नहीं बल्कि एक इंडस्ट्री के रूप में खुल रहे हैं। ऐसे स्कूलों में गरीब बच्चों के लिए भी पढ़ने की व्यवस्था होनी चाहिए। जब तक गरीब की दुआएं नहीं मिलेंगी, तब तक देश का विकास नहीं होगा। ये बातें राजस्थान फाउंडेशन, कोलकाता चैप्टर द्वारा आयोजित प्रवासी प्रतिभा पुरस्कार वितरण समारोह में उपराष्ट्रपति **श्री भैरोसिंह शेखावत** ने कही। आज जिसका सम्मान किया गया है, यह उनका नहीं, यह सम्मान पूरे राजस्थान का है। उन्होंने कहा कि बिरला परिवार ने बीआइटी पिलानी जैसे शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से राजस्थान के विकास में अहम भूमिका निभायी है। देश में सेवा, चिकित्सा व शिक्षा के क्षेत्रों मे राजस्थानियों ने अलग पहचान बनायी है। सम्मान समारोह में उपराष्ट्रपति श्री शेखावत ने प्रवासी प्रतिभा पुरस्कार से **डॉ. सरला बिरला** को सम्मानित किया। हल्दी घाटी सम्मान से **सरदारमल कांकरिया,** धरती धोंरा ही सम्मान से मरुधारा (संस्था) व मरुर गौरव पुरस्कार से **अनामिका खन्ना** को सम्मानित किया। सम्मान से आत्मविबोर **डॉ. सरला बिरला** ने कहा कि राजस्थान की बहू के रूप में मैंने बंगाल की भूमि पर रहते हुए इसकी कला और संस्कृति को करीब से देखा है। मुझमें यह कितना समाया हुआ है, कह नहीं सकती। मुझे खुशी है कि हमारे समाज की नयी पीढ़ी की छात्र-छात्राएं बोर्ड की विभिन्न परीक्षाओं

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

राजस्थान फाउंडेशन

में शीर्ष पर आ रही हैं, यह हमारे लिए गौरव की बात है। राजस्थान की शानदार गौरवशाली परंपरा को बढ़ाने में हमारी नयी पीढ़ी सक्षम है। सचिव संदीप भूतोड़िया ने अतिथियों का स्वागत किया, स्वागत भाषण हर्षवर्द्धन नेवटिया और संस्था के अध्यक्ष हरिमोहन बांगड़ ने संस्था की गतिविधियों के बारे में बताया। पुरस्कार चयन समिति की अध्यक्ष प्रभा खेतान ने सम्मानित व्यक्तियों के उपलब्धियों के बारे में बताया। समारोह का संचालन पत्रकार विश्वंभर नेवर ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सीताराम शर्मा ने किया। इस अवसर पर विधानसभा के अध्यक्ष हसीम अब्दुल हलीम, मंत्री अब्दुस सत्तार व सांसद दिग्विजय सिंह ने भी उपराष्ट्रपति व अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट में दिया।

हल्दी घाटी सम्मान से सरदारमल कांकरिया को सम्मानित करते हुए उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत।

इस अवसर पर उद्योगपति बसंत कुमार बिरला, विधायक दिनेश बजाज व उद्योगपति राधेश्याम अग्रवाल भी गणमान्य अतिथि के तौर पर मौजूद थे। इस अवसर पर हरखचंद कांकरिया, मामराज अग्रवाल, जोधराज लड्ढा, दाऊलाल बिन्नानी, जुगल किशोर जैथलिया, रतन शाह, पूनमचंद दुग्गड़, प्रमोद दुग्गड़, श्रीकांत मंत्री, अरुण मल्लावत, राधेश्याम मिश्र, अरुण तिवारी, संजय हरलालका, लोकनाथ डोकानिया सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

राजस्थान फाउंडेशन

राजस्थान केवल देवी-देवताओं के आगे माथा टेकने की जगह नही

-भैरोंसिंह शेखावत

भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम श्री भैरो सिंह शेखावत ने प्रवासी मारवाड़ियों से राजस्थान के विकास हेतु ध्यान देने और आगे बढ़ने की अपील की। उन्होंने कहा कि प्रकृति ने राजस्थान को बहुत कुछ दिया है, इसके बावजूद राजस्थान के विकास के लिए प्रवासी मारवाड़ियों को राजस्थान के लिए कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि राजस्थान के देवी-देवता प्रवासी मारवाड़ियों के लिए विशेष मान्यता रखते हैं, **लेकिन राजस्थान केवल देवी-देवताओं के आगे माथा टेकने की जगह नहीं है,** प्रवासी मारवाड़ियों को राजस्थान का विकास अधिक से अधिक कैसे हो इस पर चिंता करने और काम करने की जरूरत है।

राजस्थान की रीति, नीति, परम्परा और संस्कृति ही राजस्थान की विरासत है। राजस्थान निवासी शिक्षा, बुद्धि, कर्म हर क्षेत्र में पूरे हिन्दुस्तान में छाये हैं। राजस्थान पहले जैसा नहीं है। अब राजस्थान की तस्वीर बदली है। काफी अच्छे व विकासमूलक काम वहां हुए हैं। उन्होंने कहा कि प्रकृति ने हमें जो दिया है, उसका उपयोग कठिन है, लेकिन सही उपयोग से राजस्थान धन की धरती बन सकता है। उन्होंने कहा कि 'धरती धोंरा री' का इतिहास मामूली नहीं है। राजस्थान से जितने भी प्रवासी मारवाड़ी आये विकास कार्यों

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

राजस्थान फाउंडेशन

में शामिल हुए और उनके कार्यों से शहर का कितना विकास हुआ है, उसका अनुमान लगाया जा सकता है। उन्होंने राजस्थानवासियों से ज्यादा से ज्यादा गरीब तबके के लोगों के लिए काम करने को कहा।

महामहिम ने कहा कि देश की 26 करोड़ जनता गरीबी रेखा के नीचे हैं। उन्होंने कहा कि स्कूल में ड्राप आउट की संख्या बढ़ी है, इसमें गरीब बच्चे ज्यादा शामिल हैं। गरीब बच्चों के लिए बिरला इंस्टीच्यूट जैसे स्कूल बनाये जाय, जहां बच्चों को पढ़ने के लिए पुस्तकें दी जाय। तकनीकी शिक्षा के लिए भी गरीबों के लिए इंस्टीच्यूट खोलने, अस्पताल खोलने, मेडिकल सर्विसेज प्रदान करने की बात प्रवासी मारवाड़ियों से महामहिम ने कही। उन्होंने कहा कि बीमारी में केवल दवा के अभाव में गरीब लोगों की मौत हो जाती है। उपराष्ट्रपति ने राजस्थान फाउन्डेशन, कोलकाता चैप्टर से गरीबों के लिए काम करने वाले को पुरस्कृत करने को कहा। उन्होंने कहा कि प्रवासी मारवाड़ियों व साधन सम्पन्न लोगों की गरीबी मिटा कर मिसाल कायम करना होगा, ताकि बाहर के लोग आकर इससे शिक्षा लें।

समारोह में सम्बोधित करते हुए पश्चिम बंगाल विधानसभा के अध्यक्ष हासिम अब्दुल हलीम ने कहा कि बंगाल में स्नेह और आकर्षण है, इसलिए यहां लोग आते हैं।

बंगाल और राजस्थान का संबंध युगों से हैं। नयी पीढ़ी की भूमिका को बताते हुए उन्होंने कहा कि देश के विकास और गरीबी को मिटाने के लिए सामाजिक सम्मिश्रण जरूरी है। उन्होंने नयी पीढ़ी से दहेज प्रथा को मिटाने पर बल देने को कहा। 'गुर्जर आंदोलन' का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि गरीब और अमीर के बीच के फर्क को खत्म करना होगा, तभी इस तरह के आंदोलन बंद होंगे। राज्य के मंत्री अब्दुल सत्तार ने कहा कि बंगाल की भूमि भारत की मिलन भूमि है और मारवाड़ी हमारी प्रेरणा हैं। सबको लेकर आगे बढ़ना होगा। पूर्व रेल राज्य मंत्री दिग्विजय सिंह ने कहा कि अखण्डता को एकता में बदलने के लिए राजस्थानी समाज की अहम भूमिका है। वे जहां गये उसी को कर्मभूमि बनाकर वहां रच-बस गये।

हरिमोहन बांगड़ ने कहा कि हमारी परम्परा, सामंजस्य भाव और आपसी सहयोग बंगाल और राजस्थान के बीच सेतु बंधन है।

संस्कृति, परम्परा व आपसी प्रेम को बढ़ावा देना ही हमारे तमाम कार्यक्रमों का उद्देश्य हैं।

(साभार-संमार्ग, 1 जून, 2006)

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

मारवाड़ी जहां जाते हैं वहीं के होकर रह जाते हैं : अजय मारू

राज्यसभा सांसद व पत्रकार श्री अजय मारू के स्वागत में आयोजित एक सभा में सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा बोलते हुए। पास बैठे हुए हैं बायें श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल, दाहिने से श्री अजय मारू, महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार एवं श्री नवल जोशी।

भ्रष्टाचार से विकास की गति धीमी हो रही है। यह चिंता का विषय है। शनिवार को रसल स्ट्रीट में राज्यसभा सांसद अजय मारू ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित एक परिचर्चा में यह बात कहीं।

उन्होंने कहा कि वे अपनी संसद निधि की शिक्षा की उन्नति के लिए खर्च करते हैं। मारू ने कहा कि सांसद भी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं और झारखण्ड भी अछूता नहीं है। स्थिति यह रही है कि यहाँ का हर मुख्यमंत्री ब्लैकमेलिंग का शिकार हुआ है। सांसद ने कहा कि झारखण्ड जिस उद्देश्य से अलग हुआ वह पूरा नहीं हुआ।

श्री मारू ने कहा कि वे शेखावत को राष्ट्रपति के तौर पर देखना चाहते हैं। यह भी सुखद बात है कि यूपीए की उम्मीदवार प्रतिभा पाटिल भी संयोग से राजस्थान की वधू है। सांसद का मानना है कि युवाओं को राजनीति में जरूर आना चाहिए भले ही दल कोई भी हो।

मारवाड़ी राजस्थान से आए हैं। हर प्रदेश में घुलमिल जाते हैं और उस प्रांत के उन्नति से जुड़ जाते हैं। यही कारण है कि रांची में सामाजिक कार्यों में मारवाड़ी संस्थाएं काफी आगे हैं।

राज्यसभा सांसद व पत्रकार अजय मारू ने कहा कि मारवाड़ी जहां जाते हैं वहीं के होकर रह जाते हैं। जिस प्रदेश में वे रहते हैं, वहाँ के औद्योगिक, सामाजिक व राजनीतिक विकास में उनका सराहनीय योगदान होता है लेकिन किसी भी प्रदेश में रह रहे मारवाड़ी समुदाय के लोग जब एक छत के नीचे एकत्रित होते हैं तो अपने प्रदेश (राजस्थान) के सर्वांगीण विकास के बारे में सोचते हैं। श्री मारू शनिवार को **गणगौर तीज** में अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित बैठक में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि यह दुःख की बात है कि देशभर में एकता के लिए जाना जाने वाला मारवाड़ी समाज क्षुद्र स्वार्थों के कारण टुकड़ों में बंट गया है। मारवाड़ियों के बीच एकता के अभाव के कारण ही झारखंड में मारवाड़ी समाजसेवियों द्वारा बनाये गये अस्पताल, धर्मशाला व महलों का झारखंड सरकार अधिग्रहण कर रही है। उन्होंने कहा कि गत दिनों राजस्थान में मीणा व गुर्जर जाति के बीच आरक्षण को लेकर हुई हिंसा की मानवीय मूल्यों का गला घोंट दिया लेकिन वहां की

दहेज, दिखावा, करें पराया।

कलकत्ता नगरपालिका की पूर्व उप महापौर श्रीमती मीना पुरोहित, श्री सुभाष मुरारका, श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल विचार-विमर्श करते हुए।

मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया ने सूझबूझ व दिलेरी के साथ इस समस्या का समाधान किया। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज के विकास के लिए वे हरसंभव सहोग करेंगे। उन्होंने मारवाड़ी सम्मेलन की मासिक पत्रिका समाज विकास का लोकार्पण भी किया। अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने कहा कि व्यापार व समाजसेवा के अलावा मारवाड़ी युवा जमीनी स्तर पर सक्रिय राजनीति करें। अधिकतर राजनीतिक पार्टियों में मारवाड़ी को कोषाध्यक्ष बनाया जाता है लेकिन वर्तमान राजनीतिक में मारवाड़ी कोषाध्यक्ष की जगह अध्यक्ष बनेंगे। उन्होंने कहा कि सम्मेलन अतिशीघ्र उत्तराखंड, कर्नाटक, दिल्ली, गुजरात व छत्तीसगढ़ में प्रांतीय शाखा खोलेगा, जिससे मारवाड़ी समाज का अपेक्षित विकास हो। उन्होंने कहा कि सम्मेलन उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिए मारवाड़ी समुदाय के कमजोर वर्ग को ग्रान्ट स्कालरशिप व लोन स्कालरशिप देगा।

संयुक्त मंत्री श्री रविन्द्र कुमार लड़िया ने समाज विकास श्री मारु को भेंट करते हुए।

उपस्थिति थे श्री मुकेश खेतान, श्री दिलीप गोयनका, श्री विनोद सराफ, श्री बिमल चौधरी, श्री अनिल डालमिया, श्री चम्पालाल सरावगी, श्रीप्रेमचन्द सुरोलिया, श्री मुकुन्द राठी के अलावा कई गण्यमान्य लोग उपस्थित थे।

सुपरिचित समाजसेवी श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल धन्यवाद ज्ञापन करते हुए।

सभा में उपस्थित संयुक्त मंत्री अरुण गुप्ता, बाबूलाल धनानिया, नवल जोशी, सुबीर पोद्दार, विश्वनाथ सुल्तानिया, विश्वनाथ भुवालका आदि।

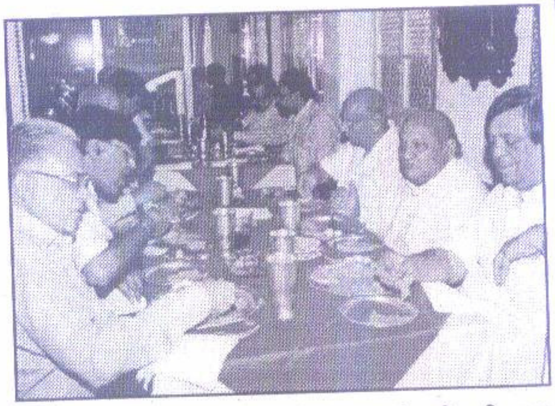

अपराह्न भोज का आनन्द उठाते हुए श्री सांवरमल भीमसरिया, विश्वनाथ भुवालका, प्रो. नारायण जैन, बाबूलाल धनानिया आदि।

संग्रहालय बनती एक खुर्रेदार हवेली

डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'

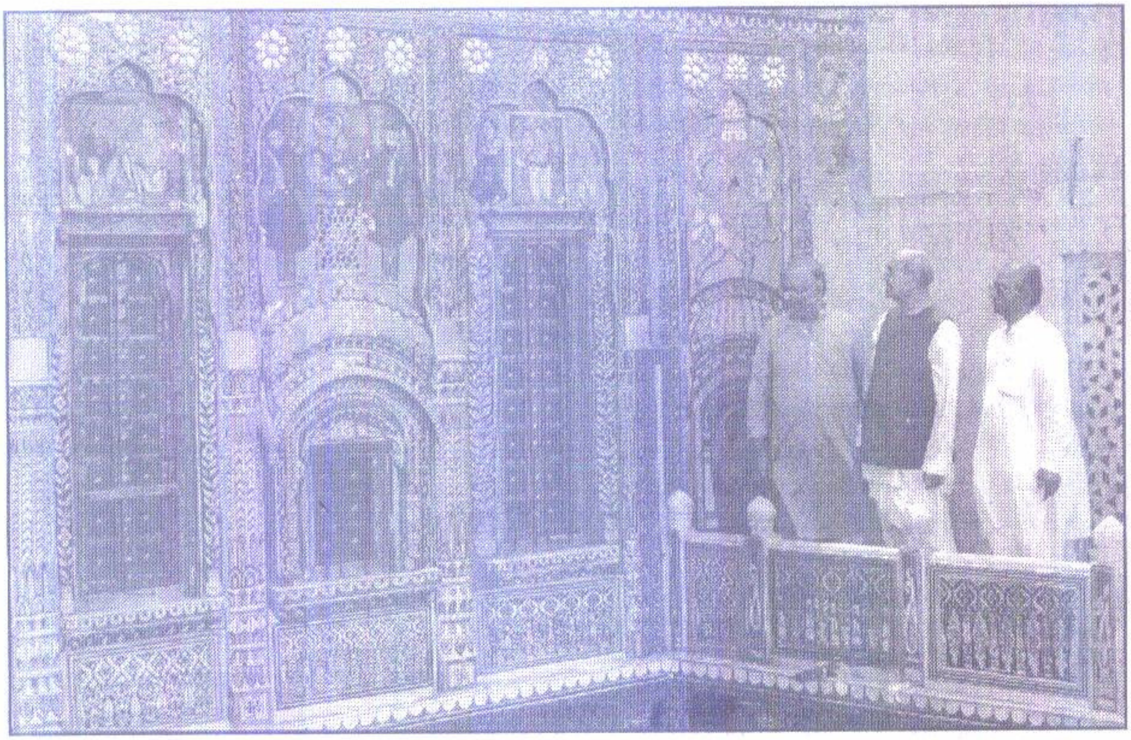

राजस्थान प्रदेश के झुनझुनूं जिले के डूण्डलोद स्थित गोइन्का हवेली अपनी आयु और पहचान के लिए एक संदर्भ है। यह हवेली स्थापत्य कला के अप्रतिम उदाहरण के रूप में उद्योगकर्मी अर्जुनदास गोइन्का द्वारा सन् 1880-90 के बीच बनवाई गई थी, जो अपने समय के सुविज्ञ और दूरदर्शी थे। विशालकाय और आकर्षक व्यक्तित्व के साथ उनकी साहित्य, कला एवं संस्कृति में भी विशेष रूचि थी और वे अपनी बादशाहत के धनी थे। वे सायंकाल कस्बाई लोगों के बीच बैठकर आगामी समय के सपने बुनते थे। अपनी लम्बी दाढ़ी-मूंछों के रोबीले चेहरे के लिए भी उनकी अलग पहचान थी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े होने के बावजूद वे लोकरंग, लोकरीति और लोक कलाओं के संरक्षण के प्रबल इच्छुक थे और इसीलिए उन्होंने अपनी एक विशाल चौक की हवेली में बाहर दो बड़ी बैठकें, आकर्षक द्वार तथा भीतर सोलह कक्षों का निर्माण करवाया था जिनके भीतर कोठड़ियां, दुसत्तियाँ, खूटियों-कड़ियों की पर्याप्त व्यवस्था रखी गई थी। उन्हें प्राचीन दुर्लभ ग्रंथ, आकर्षक बर्तनों, खाट-मुढ़ियों, आकृतिनुमा कुर्सियों, झाड़ फानूस, आदमकद शीशों और औषधियों के लिए ब्रिटिशकालीन बोतलों को एकत्रित करने का शाहंशाही शौक था। वे अपनी खूबियों के लिए जीने वाले खुशानुमा आदमी थे।

''खुर्रेदार हवेली'' के नाम से प्रसिद्ध गोइन्का हवेली के निर्माता अर्जुनदात के वंशज मोहन गोइन्का का कहना था कि पड़दादाजी के बाद उनके दादा शुभ करण एवं आनन्दराम ने 1940 तक हवेली की सुरक्षा की और वे दोनों भाई हवेली के रख-रखाव के प्रति निष्ठावान रहे। बाद में यह हवेली बरसों बरस वांछित संरक्षण के अभाव में बंद रही और

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

हवेली परिवार ने 1980 के बाद डूण्डलोद आना प्रारम्भ किया, जब परिवार को मालूम हुआ कि देश-विदेश के पर्यटक यहाँ आते हैं और उनकी इच्छा हवेली के अन्तर्गत को देखने की है। मोहन गोइन्का पुत्र पुरुषोत्तम लाल गोइन्का ने इस दिशा में सोचना प्रारम्भ किया। उन्हें उनके उड़ीसा के गुरू ने सावचेत किया था कि वे अपने बुजुर्गों की छोड़ी हुई धरोहर की भी सुरक्षा करें और हवेली को जीवंतता प्रदान करें। इससे बुजुर्गों के नाम को लोग याद रखेंगे और हवेली के रूप-स्वरूप विदेशी पर्यटकों की आँखों में रचबस जाएंगे। मोहन गोइन्का ने हवेली के कुछ कमरे 1950 में खोल कर देखे थे जिन्हें 2004 में फिर खोल दिया गया। भीतर से पूरी तरह चित्रांकित इस हवेली को नया रूप देने का कार्य 2000 में ही प्रारम्भ हो चुका था, उसे अब और आकर्षक रूप दिया जा रहा है।

हवेली का अन्तरंग

गोइन्का हवेली का अन्तरंग अनगिनत लोक चित्रों से भरा पूरा है जिनमें श्री कृष्णकालीन लीलाओं के चित्र बहुतायत में हैं। चारों ओर की ऐसी कोई भित्ति या ऐसा कोई स्थल नहीं है जिस पर कोई चित्र-मांडना या रूप न हो। पूरा चित्र फलक रंगों-रेखाओं और आकृतियों से आच्छादित है। कला की टेम्परा टेक्नीक की तरह। हवेली के प्रारम्भिक भित्ति चित्र बहुत धैर्य के साथ गीले प्लास्टर पर इटालियन शैली में चित्रित किए गए हैं जिन पर चमक और रंग रेखाओं की पकड़ है। इस चित्र शैली को **फ्रेस्को बुआनो** कहते हैं। यह शैली जयपुर से हस्तान्तरित होती हुई शेखावाटी पहुंची थी। बाद की चित्रकारी में रसायनों का प्रयोग करके रंग तैयार किए गए हैं। यह रसायन रंग सूखे पलस्टर पर किए गए हैं।

गोइन्का हवेली को देखने के लिए फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, स्विटजरलैंड, आस्ट्रेलिया तथा स्वीडन आदि कोई तीस देशों के पर्यटकों का डूण्डलोद आना निरंतर बना है और वे प्रशनाकुल होकर हवेली के पार-द्वार मंडराते रहते हैं।

दुर्लभ ग्रंथ

गोइन्का हवेली में सन् 1890 से 1930 तक एकत्रित किए गए प्राचीन एवं दुर्लभ ग्रंथ संदूकों-आल्मारियों में भरे हैं। इनमें श्रुति, शास्त्र-पुराण भी हैं तो स्वराज पूर्व के **स्वामी दयानन्द** लिखित ग्रंथ भी। पुराने बही खाते और हिसाब-किताब, भाव-तोल संबंधी कागजात भी संजाए हुए हैं जिन्हें बखूबी प्रदर्शित किया जा सकता है।

खुर्रेदार हवेली परिवार के मोहन गोइनका ने शेखावाटी उत्सव-2004 के अवसर पर नवलगढ़ में हुई। भेंट में बताया था कि वे इस हवेली को पूर्णतया रचात्मभरित बनाना चाहते हैं और यह सोचते हुए कि शेखावाटी में कलात्मक एवं दुर्लभ वस्तुओं का कोई बड़ा संग्रहालय नहीं है, वे हवेली को संग्रहालय के रूप देंगे। हवेली के कक्षों में रखी वस्तुओं के अतिरिक्त अन्यत्र एकत्रित वस्तुओं के लिए भी संग्रहालय एक केन्द्र होगा और ऐसी सभी वस्तुओं को विषयवार रूप में सुरक्षित रखा जाएगा। संग्रहलाय में प्रदर्शित वस्तुएं शेखावाटी और राजस्थान की पहचान होंगी। संग्रहालय की व्यवस्था 'टिकट विंडो प्रणाली' के आधार पर रहेगी ताकि हवेली का रख-रखाव स्वतः हो सके।

संग्रहालय बनती इस हवेली में कलात्मक एवं प्राचीन घरेलू वस्तुओं के अतिरिक्त दुर्लभ संदर्भ ग्रंथ, यातायात एवं आवागमन की वस्तुएं, साहित्य-कला-इतिहास और लोक जीवन संबंधी सामग्री भी रखी जाएगी। इससे देश-विदेश के पर्यटकों का लोक जीवन से घनिष्ठ परिचय हो सकेगा।

उन्होंने यह भी बतालाया था कि गोइन्का परिवार के वंशजों का वंशावृक्ष भी लगाया जाएगा और परिजनों के चित्र लगाये जायेंगे जिससे दर्शक जान सकें हवेली से किन-किन विभूतियों का सीधा सम्पर्क रहेगा।

संग्रहालय बनती इस हवेली में कलात्मक एवं प्राचीन घरेलू वस्तुओं के अतिरिक्त दुर्लभ संदर्भ ग्रंथ, यातायात एवं आवागमन की वस्तुएं, साहित्य-कला-इतिहास और लोक जीवन संबंधी सामग्री भी रखी जाएगी। इससे देश-विदेश के पर्यटकों का लोक जीवन से घनिष्ठ परिचय हो सकेगा। यों भी शेखावाटी विश्व के पार-द्वार के पर्यटकों के लिए एक आकर्षण रही है और वे विशाल हवेलियों एवं उनकी भित्तियों पर अंकित चित्रों को देखने आते हैं।

ऊंचे और लम्बे खुर्रे के कारण संग्रहालय में आने वालों दर्शकों के लिए समुचित व्यवस्था रहेगी और वे एक स्थान पर पूरी शेखावाटी को देख सकेंगे। देखना यह है कि हवेली कब तक संग्रहालय का रूप ग्रहण करेगी। ●

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

श्रीमन्त शंकरदेव की वाणी ''धन्य धन्य भारतवरषि''

असम में इस अमरवाणी को आज भूल जाना ही अशान्ति का और उग्रवाद का मूल कारण है

रामनिरञ्जन गोयनका

शंकरदेव की वाणी को भूल जाना ही असम में उग्रवाद का कारण है। आज के 65 वर्ष पूर्व मेरे जन्मगाँव लक्ष्मणगढ़ (राजस्थान) में बंगाल के चैतन्यदेव, पंजाब के नानकदेव तथा केरल के आदि शंकराचार्य को हिन्दी पाठ्यक्रम में मैंने पढ़ा था परन्तु शंकरदेव को नहीं। इसका मूल कारण था पूर्वोत्तर में प्रारम्भ से ही क्षेत्रीयतावाद यहां के समाज पर रहा है। लगों ने इसी क्षेत्रीय भावना के कारण शंकरदेव को भी एक क्षेत्र के सीमित दायरे में बान्धे रखा। इस क्षेत्रवाद को यहां जातविाद की संज्ञा दे दी गई, जबकि श्रीमन्त शंकरदेव ने आज के 550 वर्ष पूर्व ही प्रखर राष्ट्रवाद के कवच में ही जातिवाद की रक्षा का पथ अपनाया था। उनकी अमरवाणी '**धन्य धन्य भारतवरषि**' उसी राष्ट्रभाव की द्योतक है, ठीक वैसे ही, केरल में जन्मे आदि शंकर ने भी उदात्त राष्ट्रभाव से कहा था-''**दुर्लभो भारते जन्मा:**''

''**दुर्लभो भारते जन्मा:'' उन्होंने केरले जन्मो दुर्लभ: नहीं कहा।** मैं 65 वर्ष पूर्व की राजस्थान की बात कह रहा हूँ उस समय भारत स्वाधीन नहीं हुआ था-सारे भारत में छोटे-छोटे देशीय राज्य थे। राजस्थान में भी सीकर नरेश, जयपुर नरेश, जोधपुर, बीकानेर नरेश छोटे-छोटे राज्य हुआ करते थे। हमारे सीकर लक्ष्मणगढ़ के राजा कल्याण सिंह हमारी स्कूल श्री रघुनाथ विद्यालय का परिदर्शन करने आते तो उनके स्वागत में हम चार लड़के स्वातगान गाते थे-

''**हम भारत मां के बालक हैं हम विश्व शक्ति संचालक हैं'' हम राजपुतानी या हम मारवाड़ी बालक हैं** - नहीं गाते थे अर्थात ''राष्ट्र'' ही सर्वोपरि था, परतंत्र भारत टुकड़ों-टुकड़ों में बंटा था परन्तु हमारी आस्था तो ''भारतराष्ट्र'' के अधिष्ठान पर ही टिकी थी। इसी प्रकार असम में भी देशी राजा थे परन्तु मूल अधिष्ठान तो अखण्ड भारतराष्ट्र ही था।

असम में भी ज्योतिप्रसाद ने गाया था-''**विश्व विजयी नौजवान शोक्तिशाली भारोतोर ओलाई आहा**'' शंकरदेव ने भी कहा था मेरा जन्म इस महान देश, आध्यात्मिक देश भारत में हुआ है मैं धन्य हूँ अर्थात ''**धन्य धन्य भारतवरषि**'' इस क्षेत्रीय भावना में कुछ शंकरदेव के भक्त भी बहने लगे, और उनकी प्रशंसा में लिख डाला ''**तोमार जीबोनि लिके हेन साध्यो कार**''। **सोमोस्तो ओसोम जुरि जीबोनी** जाहार अर्थात है जयगुरु शंकरदेव आपकी जीवनी लिखना मेरे लिये साध्य नहीं है-असम्भव है-आपकी जीवनी तो पूरे असम में परिव्याप्त है। होना तो यह चाहिये था कि सोमोस्तो भारतजुरि अथवा सोमोस्तो ब्रह्माण्डो जुरि जीबोनी जाहार परन्तु हमने एक सीमाबद्ध दायरे में ही शंकरदेव, माधवदेव, हरिदेव,दामोदरदेव को बांध कर रख दिया है जिसका प्रतिफलन है कि नाम तो ''भीमकान्त'' महाभारत के योद्धा के नाम पर परन्तु अपने महाभारतीय होने को नकारा जा रहा है नाम 'अरविन्द' जो भारत की ऋषि परम्परा का प्रतीक, उस नाम को सार्थककरने की बजाय आज अपने भारतीय होने को नकारा जा रहा है-जबकि उनके नाम, गोत्र सब भारतीय हैं महाभारतीय हैं उनके पितृ-मातृ, पूर्वज सब भारतीय हैं- परम्परायें मान्यतायें आस्था के प्रतीक, कामाख्या, उमानन्द, ब्रह्मपुत्र, वशिष्ठ परशुराम कुण्ड सभी तो पूरे भारत के तीर्थाटन करने आने वाले भारतीयों की आस्ता के प्रतीक हैं।

फिर असम में यह अशान्ति क्यों-भारतमातृका की विरोधिता क्यों। वस्तुत: हम आज की भौतिक चकाचौंध में हमारी आस्था हमारा भारतीय होने का गौरव भूल रहे हैं। हम भारतीयता के प्रति स्वाभिमान शून्य हो गये हैं। अत: हमें फिर आज शंकरदेव का स्मरण करना होगा। उनको हिन्दी के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में प्रस्थापित करना होगा। जैसे बंगाल के हिन्दी भाषियों ने 65 वर्ष पूर्व चैतन्यदेव को हिन्दी के माध्यम से सम्पूर्ण देश में प्रस्थापित किया था।

श्रीमन्त शंकरदेव की अमरवाणी का स्मरण करना होगा। हमें ऐसा माहौल वापस लाना होगा कि लोगों के मुख से एक

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

स्वर में एक साथ **चैतन्यदेव, नानकदेव, मीराबाई, शंकरदेव, माधवदेव, हरिदेव, दामोदोरदेव एक ही श्वांस में उच्चारित हों आज के 550 वर्ष पहले असम के महान वैष्णव आचार्य माधव कन्दली ने वाल्मीकि रामायण का असमिया संस्करण लिखा था** उसमें अपनी मेधा से और अधिक जोड़ कर उसे अधिक सार्थक, सर्वजन हिताय लिखा था। उसकाल खण्ड में असम में आचार्य महेन्द्रकन्दली के संस्कृत टोल में शंकरवर नाम के बालक को उनकी मातामही खेरसुती (सरस्वती) ने प्रविष्ट कराया था। उस समय असम में कन्दली ब्राह्मणों के अनेक संस्कृत टोल चल रहे थे, महेन्द्र कन्दली, रुद्रकन्दली, अनन्तकन्दली, हरिवर विप्र, हेम सरस्वती, राम सरस्वती आदि द्वारा व्यापक भारतीय संस्कृत-संस्कृति का पठन-पाठन होता था।

आचार्य महेन्द्रकन्दली ने नवागत शिष्य शंकरवर की प्रतिभा, उसके मुखमण्डल के तेज, उसकी अलौकिक प्रथम कविता,

करतिल कमल
कमलदल नयन
भवदवदहन
गहनवन शयन

बिना मात्रा की कविता देखकर विस्मित होकर भावविभोर हो गये। गुरु महेन्द्र कन्दली ने पहचान लिया कि यह तो साक्षात् शंकर भगवान का वरदान स्वरूप जन्मा बालक भगवान शंकर का देव अवतार है सो शंकरवर के नाम के साथ देव जोड़ दिया और तब से ये शंकरदेव हो गये।

विद्याध्ययन के पश्चात शंकरदेव ने सम्पूर्ण भारत का दो बार परिभ्रमण किया अनेक सन्तों, महात्माओं के साथ सत्संग किया जगन्नाथ पुरी में अपना पहला सत्र नामघर स्थापित किया माधवदेव से मिलन हुआ और कलियुग केवल नाम अधारा की भावना से नामधर्म का प्रचार सम्पूर्ण असम में किया जिस प्रकार बंगाल में चैतन्यदेव ने किया और सम्पूर्ण भारत में मीरा, कबीर नानक, नरसीमेहता सब ने किया। आज असम में आठ सौ (800) के करीब सत्र-नामघर प्रस्थापित हो चुके हैं। जहाँ नियमित गीता-भागवत -रामचरितमानस आदि ग्रन्थों का पठन पांठन हो रहा है।

संकरदेव की मुख्य वाणी
धन्य धन्य कलिकाल
धन्य नरतनु भाल
धन्य धन्य भारतवरषि

इस कलियुग में भगवान ने हमारी उम्र ही सौ वर्ष अंक में बांध दी है हमें हजारों वर्ष तपस्या नहीं करनी पड़ती। सत्ययुग में पांच हजार वर्ष तपस्या करने पर जो प्राप्त होता था वह कलियुग में सौ वर्षो में ही हो जाता है अतः कलियुग धन्य है। फिर कहा धन्य नरतनुभाल-अर्थात चौरासी लाख योनि कष्टमय कीट-पतंग, पशु-पक्षी योनियों का कष्ट भोगकर मुझे यह दुर्लभ मानव देह नरतनु-प्राप्त हुयी है-इसी मानवदेह के द्वारा ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है अतः धन्य नरतनु भाल।

इसके बाद में अन्तम लिखा है "धन्य धन्य भारतवरषि" अर्थात यह दुर्लभ मानवदेह मुझे भारत में जन्म लाभ हुआ है। मैं धन्य हूँ। जिस भारत में जन्म लाभ करने के लिये देवता भी लालायित रहते हैं-जिस भारत में पापाचार अधर्म बढ़ते ही स्वयम् परमात्मा अपना सृजन करते हैं-अवतार लेकर अवतरण करते हैं **"अभ्युत्थानम्: अधर्मस्य तदात्मानम् शृजाम्यहम्"** और एक बार नहीं बार बार अवतरण करते हैं-

"सम्भवामि युगे युगे"

उस भारत में मैंने जन्म प्राप्त किया है मेरी पुण्य भूमि, मातृभूमि, पितृभूमि, धर्मभूमि, कर्मभूमि, तीर्थभूमि भारत में जन्मलाभ कर मैं धन्य हुआ अतः शंकरदेव कहते हैं "धन्य धन्य भारतवरषि"।

शंकरदेव की यह अमरवाणी "धन्य धन्य भारतवरषि" असम वासी भूल गये हैं। इसी के कारण असम में भारत विरोधी भाव के स्वर कहीं कहीं उठ रहे हैं- ऐसे में हमें शंकरदेव की अमरवाणी के प्रचारार्थ असम के शंकरदेव, माधवदेव, हरिदेव, दामोदरदेव सत्रों सत्राधिकारों को सत्रौ के बाहर आकर लोगों का शंकरदेव के प्रति स्वाभिमान जगाना है—जिस दिन सब असम वासी एकस्वर से शंकरदेव की वाणी गायेंगे असम में विराज रही सारी समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जायेगी। आज सम्पूर्ण असम में ही नहीं सम्पूर्ण भारत के स्कूलों में हिन्दी पाठ्यक्रम के साथ श्रीमन्त संकरदेव जीवन कृतित्व और संदेश नाम हिन्दी ग्रन्थ को भारत की सर्वश्रेष्ठ धार्मिक प्रेस गीताप्रेस गोरखपुर ने मात्र 8/- में प्रकाशित किया है—असम प्रेमी शिक्षानुष्ठानों के संचालकों का यह पहला कर्त्तव्य है कि सर्वजन हिताय भी शंकरदेव की यह पुस्तक मात्र 8/- में खरीदने को हर स्कूल अपने छात्रों को प्रेरित करें। शंकरदेव को जानना असम को जानना है।

असम के चाय बागानों के मालिकों का कर्त्तव्य है कि प्रति चाय बागान मात्र 20/- रोज शंकरदेव की पुस्तक प्रचार वास्ते निकालकर 1000 पुस्तकें वार्षिक विभिन्न प्रदेशों में जाने वाली चाय की पेटियों में एक Lot प्रति एक पुस्तक या 2 Lot प्रति एक पुस्तक चाय की पेटी में डाल कर असम की धरती का ऋण चुकावें।

शंकरदेव को प्रचारार्थ कृपया मुझे सुझाव भेजें। ●

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

श्रीमति प्रतिभा अग्रवाल

वंशालील बाहेती

एक जीवन्त समाज की पहचान उसके प्रतिभा सम्पन्न पुरुषों एवं महिलाओं के योगदान से आंकी जाती है। मारवाड़ी समाज के लिए यह बेहद गौरव की बात है कि हर क्षेत्र में इस समाज के लोगों ने अपने कार्य कलापों और विश्लेषण योग्यताओं का परिचय देकर पूरे समाज को गौरवान्वित किया है।

संगीत नाट्क एकेडमी एवार्ड 2005 से पुरस्कृत श्रीमति प्रतिभा अग्रवाल एक ऐसी ही प्रतिभा सम्पन्न महिला है जिसने अपने नाम को सार्थक किया है। यह सम्मान महामहिम राष्ट्रपतिजी ने उन्हें दिया है।

श्रीमति प्रतिभा अग्रवाल का जन्म 1930 में बनारस में एक ऐसे घराने में हुआ जिसने हिन्दी भाषा और हिन्दी नाटक को सशक्त बनाने में विशेष भूमिका निभाई। 13 वर्ष की छोटी उम्र में आपने अपने दादाजी द्वारा प्रदर्शित महाराणा प्रताप नाटक में अहम् भूमिका निभाई। आपकी शिक्षा बनारस-कलकत्ता एवं शांतिनिकेतन में हुई। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निर्देशनों में आयोजित **'सतरंज के खिलाड़ी'** कथा पर आयोजित नृत्यनाटक में अपनी भूमिका से श्रीमति अग्रवाल ने अपनी विशेष छाप छोड़ी। महान् लेखक प्रेमचन्द्र की इस कथा पर नाटक का आयोजन अपने आप में एक विशेष घटना थी जिसका प्रदर्शन कविगुरु रविन्द्रनाथ ठाकुर के शांति निकेतन स्थित विश्व भारती में हुआ था।

श्रीमति प्रतिभा अग्रवाल 1940 के उत्तरार्द्ध से 1950 के प्रारम्भ तक हिन्दी रंगमंच की एक बड़ी नायिका के रूप में उभरी एवं एक शौकिया कलाकार के रूप में जनजन में आदरणीय बनी। इस समय काल में **'तरुण संघ** और बाद में **अनामिका'** के ध्वज तले अपनी प्रतिभा को नई ख्याति प्रदान की।

आपने 1950 से 1970 तक कलकता की प्रसिद्ध शिक्षा संस्थान **शिक्षायतन** में शिक्षिका का अहम् दायित्व निभाया। 1950 उत्तरार्द्ध से 1990 तक हिन्दी रंगमंच की निर्देशिका एवं नायिका के साथ-साथ श्रीमती प्रतिभा अग्रवाल ने साहित्य की विशेष सेवा की। बंगला भाषा से हिन्दी में महत्वपूर्ण रचनाओं के अनुवाद, समीक्षा, जीवनी आदि उनके योगदान की मिसाल रखती है। **दूबसेन के नाटक ''जनता का शत्रु''** का हिन्दी अनुवाद आपने 1959 में किया। रविन्द्रनाथ ठाकुर की रचना **'शेष रक्षा'** का अनुवाद 1963 में बादल सरकार की सुप्रसिद्ध रचना एवं ''इंद्रजीत'' का अनुवाद 1969 में, अत्पल दत्तकी विशेष रचना **''टीन की तलवार''** का अनुवाद 1979 में एवं जयवंत दलवी की रचना Hurry up Hari का अनुवाद 1995 में उनके कृत्यों का एक छोटा सा विवरण है।

अपने समकालीन भारतीय नाटक लेखकों की कई कृत्यों पर आयोजित श्री श्यामानन्द जालान, श्री शिवकुमार जोशी, श्री विमललाठ आदि विशिष्ट निर्देशकों के निर्देशन में महत्त्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई और बेहद ख्याति प्राप्त की।

1981 में नाट्यशोध संस्थान की कलकत्ता में स्थापना करना उनके जीवन की इनकी बड़ी उपलब्धी रही है कि उसने भारतीय नाट्य एवं रंगमंच को महान गौरव प्रदान किया है।

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक एकेडमी ने 1995 में आपको **'रतन सदस्य'** के सम्मान से सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश हिन्दी संसद ने आपकी साहित्य कृतियों के लिए 1989 में सम्मानित किया।

मध्य प्रदेश साहित्य परिषद ने 1993 में तथा भारतीय अनुवाद परिषद ने 1997 में आपको पुरस्कृत कर मान बढ़ाया। संगीत नाटक एकेडमी ने 2005 का भारतीय रंगमंच के सम्पूर्ण विकास में आपके योगदान के लिए आपको सम्मान प्रदान किया है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा भी आपको गत वर्ष सम्मानित किया गया है।

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

संयुक्त परिवार की वापसी : सच या स्वप्न ?

डॉ० निरंजना सट्टावाला

पहले के धारावाहिकों की कथावस्तु दो कमरों में रहने वाले परिवार की समस्याएं होती थीं। मुहल्लों के जिन कुछ घरों में टीवी थी, वहां वीडियो थिएटर जैसा माहौल इन धारावाहिकों की लोकप्रियता का गवाह था।

विजनेस से जुड़े परिवारों में संयुक्त परिवार की मान्यताएं अब भी जीवित देखी जा सकती है। हो सकता है वहां भी एक होकर रहना भाई-भतीजों की आर्थिक और व्यावसायिक मजबूरी हो पर उनके एक होने पर यह हावी नहीं है।

अब अकेला टीवी का युग है। सौ-डेढ़ सौ रुपये में महीने भर पचास-साठ चैनल देखे जा सकते हैं। केवल के चलते दूरदर्शन दर्शकों के एक बड़े वर्ग से हाथ धो बैठा है। दूरदर्शन से छिटका और स्टार, जी द्वारा तैयार दर्शक वर्ग अपेक्षाकृत संपन्न है। इसकी समस्याएं और संघर्ष बिलकुल अलग है। यहां नौकरी का संकट नहीं अच्छी नौकरी का संकट है और एक वाक्य में कहा जाए तो संघर्ष वैभवशाली होने का है। इनकी समस्याएं आर्थिक की बजाय भावात्मक ज्यादा है। बाजार और मनोरंजन से जुड़े लोग ऐसी समस्याओं को हाथों-हाथ लेते हैं।

अब सिर्फ प्रणय निवेदन के तरीके ही बिकाऊ नहीं रह गए हैं। देवरानी को कैसे मनाया जाए, यह क्योंकि सास भी कभी बहू थी, कहानी घर घर की, 'कलश', 'मेहंदी तेरे नाम की', 'एक महल हो सपनों का', 'कभी सौतन कभी सहेली' और 'सांस' जैसे धारावाहिक देखने वाले की समस्या है और इनका समाधान पेश भी किया जाता है। सेट देखने से पता चल जाता है कि इन धारावाहिकों के दर्शक किस वर्ग से ताल्लुक रखते हैं।

परंपरा की शक्ति लगातार क्षीण हो रही है। संयुक्त परिवार की नींव और इमारत दोनों ही परंपरा से तैयार होती है। विज्ञापनों में बड़े वर्ग की परंपराओं को बेसी तरहीज हो जाती है।

नारीवादी आंदोलन चालू होने के बावजूद विज्ञापन की दुनिया के खैरख्वाह नारी की छवि बदलने का साहस नहीं जुटा पाये। वे नारी को आदर्श नारी, आदर्श-भाभी, दादी आदि ही बताते हैं। रिश्तों पर आधारित विज्ञापन संयुक्त परिवार की खुशहाली की ओर ही इशारा करते हैं।

आर्थिक समस्याएं संयुक्त परिवारों के विघटन की जड़ रही हैं। अंग्रेजों से मुक्ति पाने के बाद लोगों में रिश्तों से मुक्ति की छटपटाहट अनुशासन से निकली पीढ़ी अब मां-बाप से भी मुक्ति चाहती है। यही संयुक्त परिवार के विघटन की संक्षिप्त किंतु सत्य कथा है। संयुक्त परिवार का विघटन सबसे ज्यादा निम्न, निम्नमध्यम और मध्यम वर्ग में आधुनिक जीवनशैली अपनाने के लिए आर्थिक स्रोतों पर एकाधिकार की नीयत के चलते हुआ है। इसमें वर्तमान आमकर कानून जिसमें घर सदा की निजी फाईल मान्य होती है उसके कारण भी परिवार विभाजन को उत्तेजना मिली है।

उच्च वर्ग में आमतौर पर आर्थिक संकट के चलते परिवार का विघटन नहीं देखा जाता। हाल ही में एक सर्वेक्षण आया है कि देश में गरीबी कम हो गई है। इसी सर्वे के आकड़े बताते हैं कि 1992-93 से 98-99 के कालखंड में ग्रामीण निम्न तबके के परिवारों की संख्या में 10.5 फीसदी की गिरावट और उच्च तबके के परिवारों में 24.4 फीसदी वृद्धि हुई। इसी तरह ग्रामीण निम्न मध्यम वर्ग में 3.6 फीसदी, मध्यम वर्ग में 10.4 फीसदी और उच्च आदी मध्यम वर्ग के परिवारों में, 13.2 फीसदी की वृद्धि देखी गई। देशभर में इस दौरान निम्न वर्गीय परिवारों की तादाद 5.5 फीसदी की सालाना दर से घटी जबकि निम्न मध्यम, उच्च मध्यम और उच्च वर्ग के परिवारों में क्रमश: 8.5.8.2, 13 और 22.1 फीसदी की वृद्धि हुई है।

यदि यह सच है कि उच्च तबके के परिवारों में भारी इजाफा हुआ है तो एक बारगी माना जा सकता है कि संयुक्त परिवार जैसी संस्था के प्रति खाते-पीते लोगों में लगाव बड़ा होगा। स्पष्ट कर दिया जाए कि सिर्फ लगाव ही बढ़ा होगा, किसी भी नवधनाढ्य द्वारा परिवार के बिखरे हुए मोतियों को संजोने का उदाहरण फिलहाल देखा-सुना नहीं गया है। ये लोग संयुक्त परिवार के सपने देखते होंगे और यदि नहीं भी देखते होंगे तो धारावाहिकों में देखना पड़ रहा होगा। बिजनेस से जुड़े परिवारों में संयुक्त परिवार की मान्यताएं अब भी जीवित देखी जा सकती है। हों सकता है वहां भी एक होकर रहना भाई-भतीजों की आर्थिक और व्यावसायिक मजबूरी हो पर उनके एक होने पर यह हावी नहीं है। संयुक्त परिवारों का विघटन समाज के निम्न व माध्यम तबकों ने देखा-भोगा है और पिछले बीस-तीस सालों में इन्होंने आर्थिक संपन्नता भी पाई है। अब शायद आर्थिक चिंताओं से ये मुक्त हो चुके होंगे। इसलिए संयुक्त परिवार की स्मृतियां इन तबके के लोगों के मस्तिष्क पर बार-बार आती रहती है। वे अपनी संतानों को दादा-दादी, तमाम रिश्तेदारों और गांव वाले पर की कहानियां सुनाते रहते हैं। इनमें मन में भी एक दबी इच्छा अतीत के परिवार को वर्तमान में देखने की रही होगी।

▸▸ शेष पृष्ठ 24 पर

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

मेरी नजर से- ऋषि जैमिनी कौशिक बरुवा

मधुश्री काबरा

यह नाम कुछ बंगाली आसमी परंपरा का लगता है परन्तु हकीकत में बरुवा उनका उपनाम था, वैसे स्वयं हरियाणा में जन्में ब्राह्मण कुल के लेखक थे। मेरा इन से परिचय एक संजोग ही रहा। माहेश्वरी महासभा के चंद धनवानों को अपने चरित्र का इतिहास लिखना था उनके लिये इस काम हेतु धन खरचने का प्रोब्लेम नहीं रहा कारण चरित्र उनका और रुपया समाज (महासाभा) का की व्यवसाई लेखकों को उसके लिए तैयार भी किया गया उनमें के एक भाई को अग्रिम रकम और सामग्री भी दे दी गई पर उन्होंने दी हुई सामग्री और रकम भी दबा ली। उनके पास इतिहास सामग्री उसी तरह ठण्डे बस्ते में पड़ी रही जिसे उन्होंने मांगने पर भी कभी वापस नहीं की। तभी कलकत्ता के कुछ मित्रों ने बरुवाजी का नाम सुझाया। बरुवाजी ने तब तक "मैं अपने मारवाड़ी समाज को प्यार करता हूँ" श्रृंखला में अनेक ग्रंथ लिख प्रकाशित किये थे जिनमें प्रवासी राजस्थानियों के नामी लोगों व उद्योगपतियों के बारे में लिखा था। बरुवाजी लेखक (इतिहासकार) तो थे परन्तु व्यावसाई लालची किस्म के नहीं। उन्होंने महासभा का इतिहास लिखने की हामी भर दी और कहा कि आप मुझे सामग्री देगें तो मैं इतिहास लिख दूंगा। शायद उन्होंने उसके लिए एडवान्स (अग्रिम) रकम भी नहीं ली थी। शुरू में इन्होंने सामग्री इकट्ठी करनी शुरू कर दी और उसके लिये यात्राएं व स्वयं का खर्चा भी काफी कर लिया। इधर महासाभा वालों के पास इच्छित पुरानी सामग्री नहीं थी। सौ साल पुराना इतिहास लिखने के लिए पुरानी संग्रहित सामग्री भी चाहिए थी वह कहां से मिले पर उनका लक्ष्य महासाभा का पुराना इतिहास लिखाना नहीं बल्कि स्वयं की स्तुति प्रशंसा का वर्तमान स्वरूप वतौर निजी प्रचार का इतिहास ही लिखाना था। दूसरी बात उन महासभाई सेठों ने अपने चाटुकार व्यक्ति को बतौर संपादक नियुक्त कर लिया। जिसे इतिहास की ए. बी. सी. डी. तो दूर भाषा ज्ञान भी पूरा नहीं था उसे तो केवल पदासीन सेठों की चाटुकारिता से मतलब रहा। बरुवाजी ने उस भाई के पास वाराणसी जाने आने का काफी समय व रुपया खर्च किया पर उसके पास से कुछ भी इच्छित सामग्री नहीं मिली। पर उसने योग्यता क्षमता के नाम केवल अपने मतलब की चाटुकारिता का अड़ंगा लगाने का काम जरूर किया। उसे तो केवल इतना ही देखना था कि उस इतिहास में खुद के नाम को कितना महत्व मिलता है?

बरुवाजी ने पूरी तत्परता से-इतनी पुरानी-बल्कि सौ वर्ष पुरानी इच्छित सामग्री की खोजबीन शुरू कर दी वह भी मिले तो कहां? जहां संभव थी उनके परिजनों ने या तो रद्दी समझ कर निकाल दी या फिर तहखानों के हवाले हो गई फिर भी कुछ एक स्थानों पर तहखानों की उधई में रखे बक्सों में जो भी मिली उन्हें बरुवाजी ने एकत्र कर लिखने का काम शुरू कर दिया। जिसमें प्रारंभ के माहेश्वरी के 60/70 वर्ष पुराने अंक **चांद** का 1930 में निकला अलभ्य "मारवाड़ी विशेषांक" आदि इकट्ठा कर काम को आगे बढ़ाया। तभी किसी ने उन्हें मेरा नाम सुझाया कि महासभा इतिहास के बारे में बम्बी के मधुकाबरा से भी कुछ सामग्री मिल सकती है। बस इसी सिलसिले में वे बम्बी आए और मुझ से मिले थे। शुरू में हमारी चर्चा या जिज्ञासा का उद्देश्य एक ही रहा कि इतिहास किसका लिखा जा रहा है? महासभा का या उससे जुड़े सेठों का? इतिहास के नाम वर्तमान सेठों की चाटुकारिता तो नहीं होगी? बरुवाजी की तब करीब 70 वर्ष की आयु हो चुकी थी- दुबला पतला शरीर, लम्बा शेरवानीनुमा कोट, धोती और कुरता यही लिबास था-मुंह पर रखी हुई खिचड़ी दाढ़ी सिर पर बेतरतीब से लम्बे बाल, सिर पर कभी टोरी भी पहनते थे इस तरह दिखावे में पुराने जमाने के बंगाली लेखक कलाकार सा आभास होता था। सिगरेट का कस खेंचते हुए बोले-"श्रीमानजी आपने कैसे मान लिया कि मैं चाटुकारिता हेतु इतिहास लिख रहा हूँ?" पहले तो इतिहास

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

महासभा वाले खर्च और सामग्री देकर लिखा रहे थे परन्तु अब उसका सारा जिम्मा एवं खर्च मैंने अपने ऊपर ले लिया है-प्रकाशन खर्च की सारी जिम्मेदारी सेठानी मनोरमा देवी बरुवा उठा रही है- और हाथ के हाथ बेग से निकालकर उनका गहनों के साथ सेठानी स्वरूप के कपड़े पहने हुये चित्र दिखाया- तो मुझे लगा कि कोई संपन्न बंगाली महिला यह काम करवा रही है ? पर बाद में रहस्य खुला वह तो स्वयं इनकी धर्मपत्नी है और बरुवा उनका उपनाम (तखल्लुस) है। बरुवाजी की इस मजाक व इतिहास हेतु किये निश्चयों और मुक्त हास्य ने मुझे मोह लिया। फिर तो इसी इतिहास लेखन हेतु चर्चा के लिए मुझे दिल्ली बुलाया जिसके लिए राजधानी का ए. सी. क्लास का रिटर्न टिकिट (अग्रिम) रिजर्व कराके भेज दिया था और साथ में प्रेमपूर्वक आग्रह कि "आप हमारे घर में सेठानी मनोरमा देवी के आथित्य में रहेंगे।" मैं भावाभिभूत हो गया-और उनके इस काम हेतु दिल्ली पहुंचा स्टेशन पर वे स्वयं लेने आ गये थे साथ में शास्त्री नगर का रिक्शा भी तय कर लाये थे। भाभीजी मनोरमा देवी बहुत ही मिलनसार व परिवार वत्सल महिला थी- हालांकि तब उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था फिर भी मेरे आथित्य में कोई कमी नहीं होने दी। कुछ ही समय बाद उन्हें भीषण पक्षाघात की तकलीफ हो गई थी उनका आधा शरीर पूरी तरह निष्क्रिय हो चुका था। उस हालत में बरुवाजी ने करीब 15 वर्ष तक उनकी प्रेम पूर्वक सेवा की थी जिसमें स्वयं हाथ से खाना बनाना उन्हें खिलाना, नहलाना व उनके बाल बनाने तक का नियमित नित्य का सेवाकार्य था। ऐसी सेवा के उदाहरण तो उपन्यासों में ही मिल सकते हैं। तब के बाद उनसे मेरा अति निकटता का स्नेह सम्बन्ध बन गया जब भी दिल्ली जाता कहीं भी उतरता परन्तु सबसे पहले उन्हें ही फोन किया करता था फोन पर "**देवऋषि**" का सम्बोधन करते ही सामने से मुक्त हंसी के साथ श्रीमानजी कब पधारे ? **व्यास आश्रम** (उनके निवास का नाम) मैं आज का भोजन बना रहा हूँ सेठानी मनोरमा देवी की इच्छा है कि आप हमारे साथ ही भोजन करेंगे। मेरा भी यह नियम हो गया था कि उनके निवास स्थान जाकर उनसे जरूर मिलता था और सुविधानुसार भोजन भी करता था. संकोच तो जरूर होता था कि बरुवाजी को स्वयं इस उम्र में भोजन बनाना पड़ता था ऊपर से मेरी तकलीफ और क्यों दूँ ? पर वे नहीं मानते थे। (साभार - समाज प्रवाह) ●

संयुक्त परिवार की वापसी...

पेज 22 का शेषांश

पिछले तीन दशकों में एनआरआई या विदेशों में जाकर कमाने वालों का भी एक वर्ग तैयार हो गया है जो कि देशी वंश के सात परदेशी शिनाख्त लिए फिर रहा है। ये लोग खालिस मनोरंजन चाहते हैं। पैसे की कोई समस्या इनके सामने नहीं है। चैनलों, धारावाहिक, फिल्म निर्माताओं व बाजार की शक्तियों को ये मालदार उपभोक्ता काफी ललचाता है और वे इसका ध्यान भी रखती हैं। एनआरआई, परंपराओं ओर मान्यताओं को सहूलियत के हिसाब से तोड़-मरोड़कर अपनाना चाहते हैं। उनके संयुक्त परिवार में सब कुछ बिंदास होता है। यकीन न हो तो दिल्ली से गुड़गांव के रास्ते में पड़ने वाले फार्म हाउस की सैर कर लें। काफी हद तक धारावाहिकों में दिखाया जाने वाला वातावरण महानगरों में बसे ऐसे ही घरों का होता है।

माना जाता है कि संयुक्त परिवार की समस्याएं एकल परिवार की सहूलियत बन जाती है, पर समाधान भी स्थायी नहीं होते। महानगरों व काफी हद तक बड़े शहरों में एकल परिवारें की भरमार है। संभव है कि एकल परिवार सुखद आश्चर्य व ललचाी निगाहों से संयुक्त परिवारों की ओर देख रहे हों, अपनी नई समस्याओं के संदर्भ में सपने बुन रहे हों। एकल परिवारों से मोहभंग होना एक अलग बात है और संयुक्त परिवार का मोह होना दूसरी बात है। इस दौर में दोनों की समस्याएं दोनों की सहूलियतों में विकल्प के रूप में नहीं दिखाई देती क्योंकि मर्यादाएं, संकोच व बुजुर्गों की बात मानने जैसी परंपराएं चुक गई हैं। ये दोनों एक दूसरे के पूरक नहीं है, ये वक्त का तकाजा है। चैनल, धारावाहिक, विज्ञापन आदि के जरिए कुछ खास लोग एक विशेष वर्ग के लिए सपने बुनते हैं, बड़ी कंपनियां उन सपनों के बीच में अपने सपने पूरे करने का जुगाड़ देखती है। दर्शकों के सपने, सपने ही रह जाते हैं, कमाने वालों के सपने पूरे भी होते हैं। इस बात पर यकीन करने के लिए इस वक्त सबसे ज्यादा चर्चित धारावाहिक बनाने वाली फिल्म अभिनेता जितेन्द्र की बेटी एकता कपूर का बयान पर्याप्त है। वे अपने ट्रेड सीक्रेट के बारे में कहती हैं कि मैं परी कथाओं और जादू में यकीन रखती हूँ। मैं अपने दर्शकों के लिए सपने बुनती और बेचती हूँ।

बहरहाल ऐसा माना जाता है कि धारावाहिकों के माध्यम से केवल सपने ही नहीं बेचे जाते हैं। अधिकांश सामाजिक पृष्ठभूमि वाले धारावाहिक काफी हद तक समाज में होने वाली घटनाओं या परिवर्तन पर आधारित होते हैं। और चूकि इस प्रकार के अधिकांश धारावाहिक बहुत लोकप्रिय है तो कम से कम यह मान कर चला जा सकता है कि संयुक्त परिवार की कल्पना बहुत लोगों को गुदगुदाती हैं। (साभार : समाज प्रवाह) ●

नैतिकता का तीव्रता से अवसान

सत्यनारायण सिंहानिया

नैतिकता अर्थात् नैतिक मूल्य ऐसा मानवीय गुण है जिसके सन्तुलन से सृष्टि सहज एवं निर्बाध गति से निरन्तर गतिमान रहती है किन्तु नैतिकता का सन्तुलन बिगड़ते ही सम्पूर्ण विश्व में असहज प्रवृत्तियां उजागर होती है और द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध, वैमनस्य पारस्परिक झगड़े, रिश्तों में खटास, इन्सानियत का अधोपतन आदि अनेक दुर्गुणों का प्रादुर्भाव होने लगता है और हम सृष्टि निर्माता के उद्देश्यों की परिधि से बाहर आ जाते हैं। आज विश्व जो दुराचार, दुष्कर्म एवं अनाचार असीमित रूप से हो रहा है उसका एकमात्र कारक नैतिकता से हमारा पलायन है। यदि हम इस परिप्रेक्ष्य में दिसाहीन एवं पथभ्रष्ट होकर उद्दण्ड रूप से बढ़ते रहे तो आने वाले समय में क्या कुछ घटित होगा इसकी परिकल्पना भी नहीं की जा सकती है। नैतिकता के क्षेत्र में हमारी गिरावट को कुछ प्रक्रियाओं से अच्छी तरह समझा जा सकता है—

१. माता-पिता सन्तान के लिये भगवान का स्वरूप है किन्तु आज हम उनके कार्यकलापों को गुण दोष के आधार पर चिन्हित कर उनके प्रति मापदण्ड निर्धारित करते हैं। ,

2. सगे-सम्बन्धी, मित्र, रिश्तेदारों के प्रति हमारा नजरिया बदलाववादी बन चुका है। आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रिश्तेदार के प्रति हम पलक पॉवड़े बिछाने में गुरेज नहीं करते हैं किन्तु आर्थिक तंगी से जूझ रहे रिश्तेदार से दूरी बनाये रखते हैं एवं उसके प्रति हीन भावना ही प्रदर्शित करते हैं। क्योंकि आन्तरिक रूप से हमारे को यह भय व्याप्त रहता है कि कहीं वह आर्थिक मदद की गुहार न कर दें। यही परिस्थिति मित्रता के क्षेत्र में भी परिलक्षित होती है। क्या यही हमारे सम्बन्धों की नैतिक प्रगाढ़ता है कि हम समयानुसार एवं स्वार्थानुसार मित्रता एवं सम्बन्धों का आकलन करते हैं।

3. उद्योग एवं व्यापार के क्षेत्र में मुनाफे का निश्चित मानदण्ड नैतिकता का सबसे महत्वपूर्ण तकाजा है और जो इस दिशा में समान गति से चलता रहता है वह एक न एक दिन ऊंचाइयों को छू लेता है किन्तु आज इन सिद्धान्तों पर चलने वाले बिरले ही है। ग्राहक के अनुसार मूल्य निर्धारण, व्यवहार में बतलाव आज की प्रकृति बन चुकी है। ग्राहक भी नैतिकता की पगडण्डियों से भटक चुका है। यदि भूलवश आभाव अधिक या मूल्य कम लगते हैं तो चुप रहना और आमद कम होने या मूल्य अधिक लगने पर अविश्वास जागृत करना, क्या यही हमारी नैतिकता बच गई है ?

4. सेवा के क्षेत्र में समर्पित भावना से कार्य के प्रति लगाव तथा अच्छे परिणाम प्रस्तुत करना प्रत्येक सेवक का नैतिक उत्तरदायित्व है किन्तु आज इस दिशा में कार्य करना तो दूर, सोचना भी हम नहीं चाहते। हम जिस संस्थान से सम्बद्ध हैं उसके हितों पर ही पैनी नजर बनाये रखते हैं।

5. सामाजिक एवं राजनैतिक संगठनों में नि:स्वार्थ सेवा, सहकारिता एवं समर्पण भावना का आज विलोप सा हो चुका है। नीति, सिद्धान्तों एवं नियमों को ताक पर रखकर हम उच्च पदस्थ अधिकारियों की नजरों को निहारने एवं चाटुकारिता के प्रति ही सजग रहने का प्रयास करते हैं ताकि उनकी कृपादृष्टि से हम अपने पैर मजबूती से टिकाये रहे, क्या यही हमारी नैतिकता है। हम अपने स्वत्व को नष्ट कर प्रभावशाली ओहदे पर बैठे व्यक्तियों का चरण चुम्बन कर अपने को धन्य मानते हैं उनकी उचित अथवा अनुचित सभी बाते हमें श्रेयस्कर लगती है। नैतिक मूल्यों में इतनी गिरावट हमारे इन्सानी जज्बों को नष्टप्राय करने हेतु पर्याप्त है।

6. पंच एवं निर्वाचन अधिकारी निर्विवाद रूप से निष्पक्ष होता है और उसे विशेष कार्य निष्पादन तक निष्पक्ष ही रहना चाहिये। यही नैतिकता की मांग है। किन्तु आज के समय में यह देखने को मिलता है कि पंच वादी अथवा प्रतिवादी के आयोजनों में बाद के दौरान तथा निर्वाचन अधिकारी ग्रुप विशेष की निजी बैठकों में उपस्थित होकर अपनी नैतिकता को तार-तार कर रहा है। ऐसे व्यक्ति जो नैतिकता की दुहाई का संदेश देते थकते नहीं है वे भी इसमें लिप्त नजर आते हैं। क्या इस परिपाटी से हम नैतिक मूल्यों की ध्वाजा फहरा सकते हैं ?

7. समय एवं परिस्थिति के अनुसार किसी के प्रति हमारे विचारों में परिवर्तन जैसे आज की जरूरत बन गई है। निज हित एवं आर्थिक स्वार्थ के वशीभूत होकर हम विचारों में समय-समय पर परिवर्तन करके किसी व्यक्ति विशेष को अपने मन में ऊंचा अथवा नीचा स्थान देते रहते हैं, क्या यही हमारी वैचारिक दृढ़ता है, जो मानव मात्र में होना चाहिये।

सच पूछिये तो ऐसी अनेक स्थितियाँ है जिनका आकलन करने में यह बात उभर कर साने आती है कि हम नैतिकता की परिधि से भटक कर दूसरी पगडंडियों पर चल रहे हैं और चलते-चलते जो सुगम पथ नजर आता है, उस तरफ का मुंह कर लेते हैं। निर्दिष्ट तक पहुंचने का यह तरीका जिसे हममें से अधिकांश अपनाये हुये हैं। नैतिकता आत्मसन्तुष्टि का पथ है, ईश्वर की कल्पना का पथ है जिससे हम भटक चुके हैं। धन, ऐश्वर्य, यश, प्रमाद एवं अभिमान हमारे कवच बन चुके हैं और हम सद्गुणों से निरन्तर युद्ध कर रहे हैं। सत्य तो यह है कि हम भरे समाज में धृतराष्ट्र बनकर नैतिकता रूपी द्रोपदी का चीरहरण करवाने को आतुर हैं, किन्तु कोई भी महात्मा विदुर की तरह मुखर एवं नीतिवान बनकर आगे बढ़ने को तैयार नजर नहीं आता। आइये! अन्तरात्मा से हम अपनी कार्यप्रणालियों एवं गतिविधियों का लेखा जोखा करें और समय रहते स्वयं को नैतिक मूल्यों के प्रति सजग। ●

मिलनी सबकी चार रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।

कुण्डलिया फाउण्डेशन

मेरा आशियां

उम्र-ए-दराज मांगकर लाए थे चार दिन,
दो आरजू में कट गए दो इन्तजार में ।

उपरोक्त पंक्तियों के रचनाकार ने जिन्दगी के फलसफे को दो टूक शब्दों में बयान किया है। चार दिन की जिन्दगानी का आधा सफर सचमुच उम्मीद और आरजू में कट जाता है। आरजू पूरी होते-होते जीवन की संध्या बेला आ जाती है। फल का स्वाद चखने की बेला आते-आते शरीर शिथिल हो जाता है। ऐसे में तमाम उम्र खटकर बटोरी गयी दौलत ही काम आती है, या फिर संतान की मेहरबानियों पर जिन्दगी के बकाया दिन पूरे करने होते हैं।

अतीत में संयुक्त परिवार की प्रथा रही है, लेकिन आज की भागमभाग की जिन्दगी में जहां संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, वहां परिवार के बड़े-बुजुर्गों की सेवा-परवरिश की जिम्मेदारी को लेकर हर कोई बचना चाह रहा है। बहुत कम घर ही ऐसे हैं, जहां माता-पिता को जीवन के आखिरी दिनों में शुकून की जिन्दगी देने की कोशिश की जाती है। आधुनिकता की आंधी में नयी पीढ़ी के लोग इस कदर बोवरे हुए जा रहे हैं कि बेटा अपने माता-पिता के सुख का हिसाब-किताब अपनी बहू-बीवी के साथ मिलकर तय करता है। सास भी कभी बहू थी जैसे टीवी सीरियलों के माध्यम से आधुनिक परिवारों की गतिविधियों को आसानी से समझा जा सकता है। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि बुजुर्गों के बुढ़ापे के दिन सुख के होंगे, इस बात की कोई गारंटी संतान से प्राप्त कर लेना आसान नहीं है। यह सब या तो बुजुर्गों के भाग्य पर निर्भर करता है, या फिर बेटे-बहू के मिजाज पर। हालांकि राजस्थानी मूल के परिवारों में अभी यह संकट बहुत अधिक विस्तार नहीं ले पाया है, फिर भी कौन जानता है कि आधुनिकता के इस परिवेश में उन्हें भी अपने घर के बुजुर्ग ओल्ड डेटेड सामान की तरह लगने लगें और उनके लिए घर की चार दीवारी में पांचवें कोने की तलाश करनी पड़े।

बुजुर्गों के लिए सबसे बड़ी चिन्ता एकाकीपन की होती है। उनके साथ बैठकर दो पल बतियाने की फुर्सत आज किसी शहरी औलाद के पास शायद ही हो। बुजुर्गों को ऐसी चिन्ता से मुक्ति दिलाने के लिए सामाजिक स्तर पर कई तरीके से प्रयास हो रहे हैं। इसी शृंखला में ही एक कारगर उपाय तलाश किया है कुण्डलिया फाउण्डेशन ने।

कुण्डलिया फाउण्डेशन के प्रधान संचालक प्रदीप कुण्डलिया बड़े ही जज्बाती और संवेदनशील इंसान हैं। बड़े बुजुर्गों के प्रति की जा रही अनदेखी को उन्होंने न सिर्फ शिद्दत से महसूस किया, बल्कि इस दिशा में ठोस पहल करने का भी निश्चय किया। कुछ साल पहले उन्होंने तय किया कि उनका फाउण्डेशन ऐसे लोगों के लिए आशियाना बनाकर उनकी परवरिश की पूरी जिम्मेदारी लेगा, जिनके लिए बुढ़ापा अधिशाप बन रहा है। **हुगली जिले के कोन्नगर में नदी के किनारे 41, जी. टी. रोड (ईस्ट)** पर अत्यन्त प्राकृतिक परिवेश में उन्होंने अनपे सपनों का एक आशियाना तैयार किया है, बुजुर्गों के लिए। नाम रखा है - **होम-एज**। होम-एज में ऐसी तमाम सुविधाएं हैं, जो एक बुजुर्ग को चाहिए। यहां रहने वाले बुजुर्गों को उनकी संतान तो सुलभ नहीं होगी, अलबत्ता संतान से अधिक फिक्र करने वाले लोगों की कमी यहां हरगिज न होगी- यह कहना है प्रदीप कुण्डलिया का। प्रदीप आगे बताते हैं होम-एज में रहने वालों के लिए चायपान से भोजन तक की तमाम सुविधाओं के अलावा नियमित चिकित्सकीय सुविधाएं भी रहेंगी। इनके अलावा 24 घंटे लिफ्ट, एटीएम काउंटर, गेस्ट रुम, पुस्तकालय, भोजन कक्ष, मनोरंजन कक्ष, विशाल हाल, ध्यान व आराधना कक्ष, लाउंड्री, टेलीविजन, कम्प्यूटर, फैक्स, रेफरीजरेटर, आदि का भी प्रबन्ध रहेगा। यहां रहने वाले सभी बुजुर्गों का साप्ताहिक चेक-अप कराया जाएगा और उनके ईलाज की व्यवस्था होगी। बुजुर्गों की हाजिरी के लिए हर समय स्टाफ मुस्तैद रहेंगे। पढ़ने-लिखने और मनोरंजन के भी तमाम उपाय यहां किए गए हैं। हुगली नदी के किनारे रमणीय परिवेश में स्थित होम-एज बुजुर्गों के लिए जिन्दगी का सुनहरा अध्याय बनता जा रहा है।

होम-एज के प्रभारी सुनीत गुणाकर मित्रा बताते हैं—यहां 12 डबल बेड कक्ष हैं। बुजुर्गों की सुरक्षा के लिए यहां दरवाजे नहीं बनाये गए हैं, क्योंकि शारीरिक शिथिलता की वजह से कभी कभी फंस जाते हैं। फिर भी यदि उनकी मांग रही तो स्लाइडिंग दरवाजे का प्रबन्ध कर उनकी जिन्दगी को और आसान बनाया जा सकता है। यहां 925 वर्गफुट के 20 फ्लैट भी बनाये गए हैं। बुजुर्गों परिवार इन्हें खरीदकर भी यहां रह सकता है। प्रदीप कुण्डलिया बताते हैं कि होम-एज का एकमात्र उद्देश्य बुजुर्गों की जिन्दगी की संध्या बेला को सुरभित बनाये रखना है। इसी वजह से यहां तमाम सुविधों के बावजूद शुल्क इस हिंसाब से रखा गया है कि किसी को भारी न पड़े। यह एकमुश्त भुगतान पर भी उपलब्ध है और बैंक से ऋण उपलब्ध करवाकर आसान मासिक किश्तों में भी चुकाया जा सकता है। होम-एज में दाखिले की न्यूनतम उम्र पुरुषों के लिए 65 और महिलाओं के लि 60 रखी गयी है।

(राष्ट्रीय महानगर से साभार)

राजस्थान परिषद ने मनायी 468वीं जयंती

प्रताप की देशभक्ति हर हाल में प्रासंगिक : लखावत

कोलकाता, 18 जून। ''महाराणा प्रताप ने घोर विपरीत परिस्थितियों में जिस आदर्श, त्याग एवं तपस्या के बल पर अपनी स्वाधीनता की लपट को बुझने नहीं दिया वह किसी भी राष्ट्र के लिए हर काल में प्रासंगिक रहेगी। यही कारण है कि जब-जब राष्ट्र पर संकटों के काले बादल उमड़े, हमें राणा प्रताप याद आये। याद आया उनका शौर्य, त्याग एवं सिर झुकाकर जीने के बजाय संघर्ष करते हुए बलिदान हो जाने का संकल्प।'' ये उद्‌गार हैं राज्यसभा के पूर्व सांसद एवं वर्तमान में राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं विकास प्राधिकरण के **अध्यक्ष श्री ओंकारसिंह लखावत** के जो उन्होंने राजस्थान परिषद द्वारा आयोजित महाराणा प्रताप की 468वीं जन्म जयंती के समारोह का उद्‌घाटन करते हुए प्रकट किये।

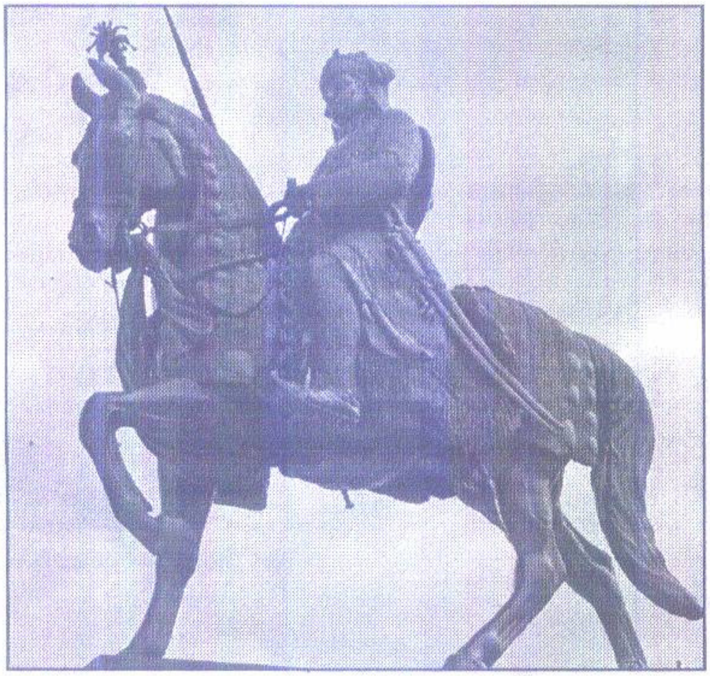

श्री लखावत ने आगे के बीच की लड़ाई होकर संस्कृति एवं भी ऐसी ही चुनौती प्रताप की मानसिकता करना पड़ेगा एवं इस चाहें हमें जितना भी परिषद विगत अनेक जयंती मनाकर **प्रधान अतिथि** कहा कि प्रताप का वाला है। रांची में भी बड़ा समारोह **प्रतिवर्ष** उन्होंने ऐसे समारोह में का सुझाव दिया। सुप्रसिद्ध आयकर **कुमार तुलस्यान** ने प्रताप की चेतक पर

कहा कि प्रताप एवं अकबर केवल सत्ता दखल की न मानसिकता की थी। आज हमारे सामने है जिसका हमें को अपनाकर ही सामना लड़ाई में जीतना ही पड़ेगा, कष्ट उठाना पड़े। राजस्थान वर्षों से इस महापुरुष की सराहनीय कार्य कर रही है। **सांसद श्री अजय मारू** ने स्मरण ही चैतन्य भरने आगे से इस अवसर पर हो इसका वे प्रयत्न करेंगे। युवकों की भागीदारी बढ़ाने समारोह अध्यक्ष एवं सलाहकार **श्री सज्जन** कोलकाता में महाराणा सवार बड़ी मूर्ति लगाने के

राजस्थान परिषद के प्रयत्न को ऐतिहासिक बताते हुए इसमें अपने पूरे सहयोग का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में परिषद उपाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने हल्दीघाटी एवं दिवेर युद्ध का रोचक वर्णन करते हुए बताया कि जहां हल्दीघाटी का युद्ध अनिर्णित रहा वहां दिवेर युद्ध में प्रताप को ऐतिहासिक सीधी विजय मिली और इसी के बाद प्रताप ने एक-एक कर मेवाड़ के पूरे इलाके पर पुन: आधिपत्य जमा लिया। इसीलिए **कर्नल टॉड** ने दिवेर युद्ध को **'मेराथन'** की संज्ञा दी है पर भारत के इतिहासकारों ने इस पर जानबूझ कर बहुत कम लिखा है। प्रताप ने हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात अपनायी गयी गुरिल्ला युद्ध नीति को त्याग कर दिवेर एवं उसके पश्चात मुगल ताकतों से आमने-सामने की निर्णायक लड़ाइयां लड़ी एवं जीती। श्री जैथलिया ने प्रताप के व्यक्तित्व को हिमालय से ऊंचा एवं सागर सा गहरा बताते हुए इस पर और अधिक शोध पर बल दिया। **श्री शार्दुल सिंह जैन** ने अतिथियों का स्वागत किया एवं कहा कि प्रताप की मूर्ति का कार्य शीघ्र ही पूरा किया जायेगा। कार्यक्रम का **संचालन अर्थमंत्री रुगलाल सुराणा जैन** ने एवं धन्यवाद ज्ञापन राजस्थान परिषद के **महामंत्री श्री अरुण प्रकाश मल्लावत** ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री नन्दकुमार लढ़ा एवं सम्पत मानधण्या सक्रिय थे। समारोह में महानगर की विभिन्न नागरिक परिषदों के पदाधिकारियों एवं समाजसेवियों के अलावा राजस्थान फाउण्डेशन के मंत्री श्री **संदीप भुतेड़िया** तथा क्षत्रिय समाज के भी कार्यकर्त्ता बड़ी संख्या में मौजूद थे। ●

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

राष्ट्रपति पद के दो उम्मीदवार

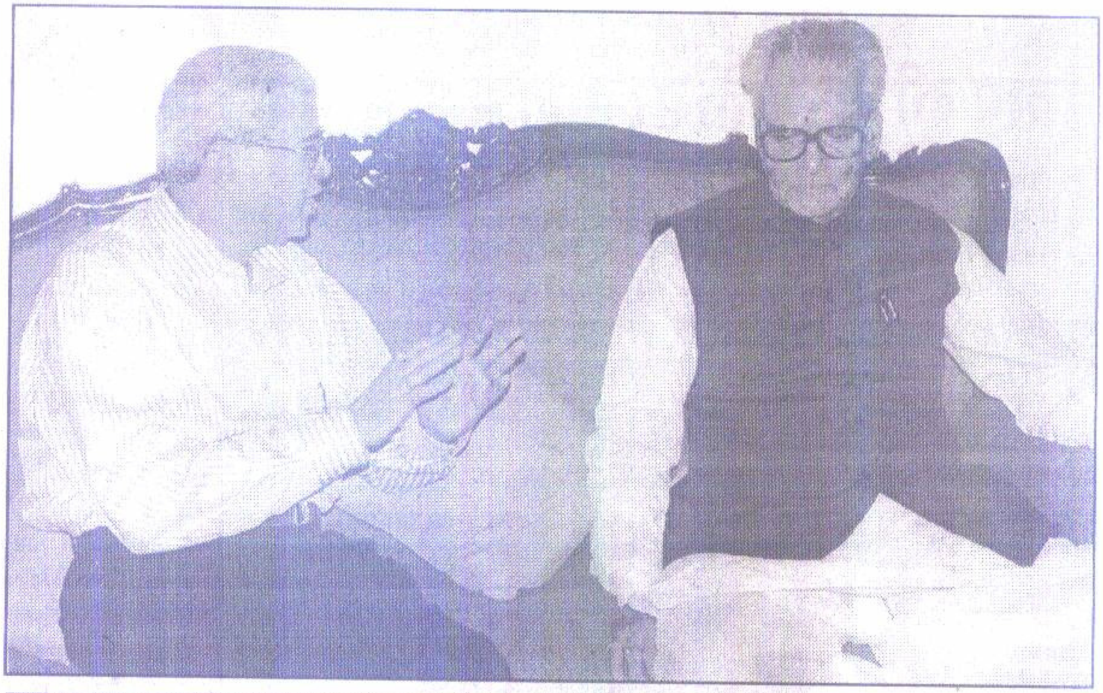

सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत से सम्मेलन के संदर्भ में विचार विमर्श करते हुए (ऊपर) एवं श्रीमती प्रतिभा पाटिल राजस्थान की राज्यपाल के रूप में सम्मेलन के कार्यक्रम में वर्ष 2005 में पधारी। उक्त चित्र में श्री सीताराम शर्मा स्वागत करते हुए।

भीमसेन भवन में छायी प्रतिभा एवं कला की छटा

रायपुर/मारवाड़ी सेवा समिति द्वारा आयोजित 15 दिवसीय कला एवं राजस्थानी लोक नृत्य प्रशिक्षण कार्यक्रम अब पूर्णता की ओर है। कार्यक्रम के द्वितीय चरण में सभी कलाओं के प्रशिक्षण में दूसरी बैच का प्रशिक्षण (क्रेश कोर्स) प्रारम्भ हुआ। एक ओर जहां दूसरी बैच के प्रशिक्षणार्थी नयी शुरूआत में व्यस्त थे, वहीं प्रथम बैच के विद्यार्थी समापन समारोह की तैयारियों में व्यस्त थे। सुरंगों राजस्थान नामक इस कार्यक्रम में सभी कलाओं के प्रशिक्षण प्राप्त युवतियाँ एवं महिलां अपनी-अपनी कलाओं की रंगारंग प्रस्तुति देगी। इस अवसर पर राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त "गुरू माँ" श्रीमती शकुन्तला पवार जी, उदयपुर, शिल्प गुरू - श्री गोविन्द सिंह नागवंशी, ग्वालियर, स्टैन ग्लास प्रशिक्षक- श्री मनीष जी, कराटे प्रशिक्षिका -कु. हर्षा साहू जी, व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण द्वय- श्रीमती विनिता शशांक शुक्ल, भिलाई, ब्यूटिशियन - श्रीमती किरण गुप्ता जी का कला गुरू अभिनन्दन कार्यक्रम के तहत अभिनन्दन एवं वन्दन किया जायेगा।

अ. भा. मारवाड़ी युवा मंच की कन्या भ्रूण संरक्षण समिति की राष्ट्रीय सह संयोजिका श्रीमती प्रज्ञा राठी ने कन्या भ्रूण संरक्षण हेतु संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। इस अवसर पर भाजपा महिला प्रदेश अध्यक्ष विभा राव, शोभना पाडी, महिला आयोग अध्यक्षा- श्रीमती सुधा वर्मा, छ. ग. माहेश्वरी महिला संगठन की प्रदेश अध्यक्षा- श्रीमती जेयति राठी, श्रीमती सुषमा दस्सानी, श्री छगन मूंदड़ा की गरिमामयी उपस्थिति एवं सान्निध्य भी संस्था को प्राप्त हुआ।

विवाह में सादगी बरतें।

युगपथ चरण

विमल लाठ राष्ट्रीय कालिदास सम्मान से सम्मानित

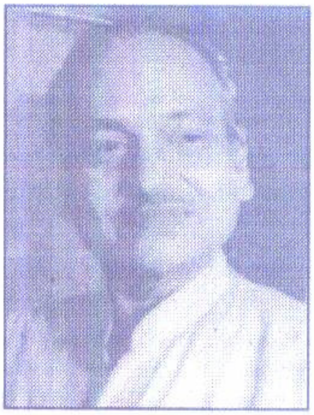

श्री विमल लाठ

कोलकाता, 25 मई। सुप्रसिद्ध रंगकर्मी, बड़ाबाजार लाइब्रेरी के अध्यक्ष, संस्कार भारती के अखिल भारतीय नाट्यविद्या प्रमुख एवं विश्व हिन्दू परिषद के दक्षिण बंगाल के उपाध्यक्ष तथा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री विमल लाठ को वर्ष 2006-07 के राष्ट्रीय कालिदास सम्मान (रंगकर्म) से भोपाल में आयोजित एक विशेष समारोह में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह के हाथों सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप दो लाख रुपये की राशि एवं सम्मान पट्टिका मध्यप्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग की ओर से भेंट की गई। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान इस कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित थे।

श्री विमल लाठ ने नाटकों में अभिनय की शुरुआत श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय में सन् 1955 ई. से की। 1951 ई. में **हेनरिक इबसन** के नाटक **'जनता के शत्रु'** के माध्यम से **'अनामिका'** के साथ जुड़े। श्रीमती प्रतिभा अग्रवाल एवं श्री श्यामानन्द जालान के निर्देशन में नाटकों में अभिनय किया जिनकी भरपूर सराहना हुई। सन् 1973 ई. से स्वयं नाटकों का निर्देशन प्रारंभ किया। कविता मंचन एवं कहानी मंचन के प्रयोग विशेष रूप से पूरे देश में समादृत हुए। अभिनय के साथ-साथ वे रंग परिकल्पनाकार तथा आलोक के क्षेत्र में भी लगातार सक्रिय रहे। **चन्द्रगुप्त, एक था गधा, कथा एक कंस की, एक और द्रोणाचार्य, हरि अप हरि, प्रभृति अनेकों नाटकों के सफल निर्देशन के साथ-साथ आपने संयोजन-समन्वय का भी अहम कार्य किया है।** आप प्रबुद्ध लेखक, कवि एवं व्याख्याकार हैं। ●

सांस्कृति निष्ठा ही भारत को वैभवशाली बनाएगी

-विमल लाठ

कोलकाता, 10 जून। "अभी भारत को भारत बनना बाकी है। वैभवशाली भारत का निर्माण अर्थवाद, मतवाद या राजनीतिवाद से नहीं होगा; महिमामयी संस्कृति और समृद्ध परम्परा से ही संभव होगा।" ये विचार है प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री विमल लाठ के, जो आज श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय कक्ष में 'मेरी रचना यात्रा' विसयक व्यख्यान माला के अन्तर्गत बोल रहे थे।

पिछले दिनों भोपाल में रंगकर्म के लिए सुप्रतिष्ठित 'राष्ट्रीय कालिदास सम्मान' से सभादृत होने के उपलक्ष में पुस्तकालय द्वारा आयोजित गोष्ठी में श्री लाठ ने कोलकाता की नाट्य संस्था 'अनामिका' के साथ अपनी प्रेरक सन्निधि का जिक्र करते हुए विविध प्रसंग सुनाए। उन्होंने आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, श्री श्यामानन्द जालान, डॉ. प्रतिभा अग्रवाल के अतिरिक्त परमपूजनीय गुरु गोलवलकर जी, भाऊराव देवरस, भँवरलाल मल्यावत, डॉ. प्रतापचंद्र चंद्र आदि विशिष्ट जनों का स्मरण करते हुए कहा कि निष्ठा एवं अनुशासन का मूल मंत्र मुझे इन सबके संपर्क से प्राप्त हुआ।

नाट्यशोध संस्थान की निदेशक डॉ. प्रतिभा अग्रवाल ने विमलजी के दायित्व बोध की तारीफ करते हुए नाट्यनिर्देशक के रूप में उनकी खासियत की चर्चा की। उन्होंने कहा कि 'काव्य प्रवाह' जैसे प्रयोग कर विमलजी ने महत्वपूर्ण काम किया है। ललित निबंधकार डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र ने कहा कि विमलजी का सम्मान कोलकाता के विद्या-जगत का सम्मान है। अपने विश्वास के प्रति दृढ़ रहने वाले विमलजी का संस्कार पक्ष अत्यंत प्रवल है। भारतीय भाषा परिषद के निदेशक डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी ने कहा कि यह कितनी बड़ी त्रासदी है कि हमें परंपरा से काटने की बात आधुनिक लगती है। उन्होंने विमलजी की संस्कृति-निष्ठा और परंपरा प्रेम की सराहना की।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाइब्रेरी, अनामिका एवं मंडावा नागरिक परिषद की ओर से श्री लाठ को शाल, अंगवस्त्र एवं पुष्पगुच्छ प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री जुगल किशोर जैथलिया ने किया।

समारोह को सफल बनाने में सर्वश्री महावीर बजाज, नन्दकुमार लढा, अरुण प्रकाश मल्लावत, जयगोपाल गुप्ता, अशोक गुप्ता, अरुण सोनी, विधुशेखर शास्त्री आदि सक्रिय थे। ●

चमेली देवी महिला महाविद्यालय का अच्छा रिजल्ट

जूनागढ़ चमेली देवी महिला महाविद्यालय की लड़कियों ने बारहवीं की परीक्षा में 94% पास किये। 68 लड़कियों में से 64 लड़कियां पास हुई है। प्रथम श्रेणी में कुमारी सरित अग्रवाल तृतीय श्रेणी में 24 लड़कियों एवं तृतीय श्रेणी में 39 लड़कियां पास हुई है। कालेज कमेटी के सभापति माणिक चन्द अग्रवाल, सचिव श्री भागीरथी सामन्त राय, कोषाध्यक्ष श्री संजय कुमार अग्रवाल एवं अध्यक्ष श्रीमती प्रियमंजरी पण्डा ने लड़कियों को बधाई दिये हैं।

नेती दुधवेंवाला को 96.75% अंक

मिस नेती दूधवेवाला आईएससी परीक्षा 2007 में 96.75% अंक प्राप्त कर अपने विद्यालय ''पराठ मेमोरियल स्कूल'' कोलकाता में प्रथम स्थान पर रही। इस छात्रा ने एकाउंटेंसी में 100 में 100 अंक प्राप्त किये। मिस नेती शहर के जाने-माने चार्टर्ड एकाउंटेंट श्री अघोर कुमार दूधवेवाला की लड़की है।

संगम अकादमी लखीमपुर

कुमारी निशा शर्मा, लखीमपुर, संगम अकादमी ने माध्यमिक परीक्षा में 85.8% अंक प्राप्त किये। पिता का नाम श्री बलबीर शर्मा एवं माता का नाम श्रीमती कमलेश शर्मा है।

अभिषेक गर्ग को 96.8 प्रतिशत अंक

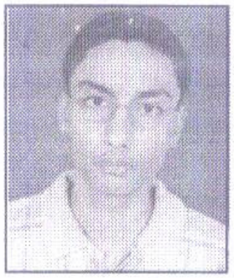

सी. बी. एस. सी. की परीक्षा में ज्ञान निकेतन पटना के छात्र अभिषेक गर्ग ने 96.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर शानदार सफलता हासिल की है। इसने गणित में 100% सोशल साइंस में 98% संस्कृत में 97%, साइंस में 95% और अंग्रेजी में 94% अंक प्राप्त किए हैं।

भारत सरकार के प्रशासनिक सेवा आईएएस परीक्षा में नौवां स्थान प्राप्त श्री अरविन्द कुमार अग्रवाल को मारवाड़ी महिला समिति, जूनागढ़ एवं गायत्री परिवार ट्रस्ट की तरफ से सम्मानित किया गया।

कविता

पंछी

प्रीत की रीत बता दे पंछी, मानवता हमें सिखा दे पंछी।
भाई बना भाई का दुश्मन, इसका भेद मिटा दे पंछी।
भारत के खोये वैभव को, फिर से वापिस ला दे पंछी।
रामराज्य के मूल मंत्र को, जन-जन तक पहुँचा दे पंछी।
भूखे पेट कोई न सोवे, ऐसा माहौल बना दे पंछी।
अनैतिकता पर नैतिकता की, अब तो धाक जमा दे पंछी।
मेरी प्यारी मातृभूमि को, फिर से स्वर्ग बना दे पंछी।

-परशुराम मोदी 'पारस'
आईकॉन नीको फेब (फैक्ट्री), नवरंग सोसाईटी
सूरत (गुजरात)

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान डॉ. एस. एल. भैरप्पा को

कोलकाता महानगर की सुप्रसिद्ध साहित्यिक-सामाजिक संस्था '**श्री बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय**' द्वारा प्रवर्तित विक्रमाब्द 2064 (2007 ई०) का 18 वाँ 'डॉ० हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' कन्नड़ के पविरष्ठ एवं सुप्रतिष्ठित साहित्यकार तथा राष्ट्रवादी लेखक डॉ० एस. एल. भैरप्पा को रविवार, 1 जुलाई 2007 ई. को प्रात: 10 बजे स्थानीय 'महाजाति सदन' के प्रेक्षागृह में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदान किया जायेगा। सम्मान स्वरूप इक्यावन हजार की राशि एवं मानपत्र भेंट किया जायेगा।

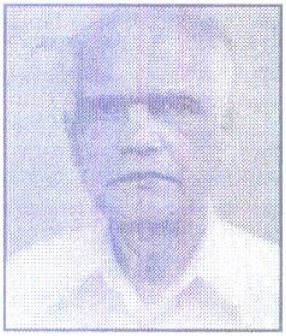

26 जुलाई 1934 ई० को कर्नाटक के हसन जिले के संतेशिवर नामक ग्राम में अत्यन्त निर्धन परिवार में जन्मे डॉ० भैरप्पा ने अपनी प्राथमिक शिक्षा चन्नारयपट्टण नामक तालुका शहर में एवं बाद की एम. ए. तक की शिक्षा मैसूर में पूरी की जिसमें उन्हें स्वर्णपदक प्राप्त हुआ। डाक्टरेट की उपाधि महाराजा शायाजीराव विश्वविद्यालय (बड़ौदा) से प्राप्त की। एन. सी. ई. आर. टी. (दिल्ली) होते हुए अन्त में 1971 ई० में मैसूर कॉलेज में आ गए जहाँ से 1991 ई० में अवकसा ग्रहण कर पूर्णरूपेण लेखन कार्य में लग गए। आप का पहला उपन्यास '**धर्मश्री**' 1961 ई० में प्रकाशित हुआ। तब से आप निरन्तर सृजनशील रहे हैं। इस वर्ष 21 वें उपन्यास '**आवरण**' ने तो प्रसिद्धि के नये कीर्त्तिमान बनाये हैं और इस अल्पावधि में उसके 4 संस्करण हो चुके हैं। आपके '**उल्लंघन**' और '**गृहभंग**' उपन्यास अंग्रेजी एवं भारतवर्ष की प्रमुख 14 भाषाओं में अनुदित हो चुके हैं। '**धर्मश्री**' और '**सार्थ**' उपन्यास संस्कृत में अनुदित हैं। महाभारत पर आधारित '**पर्व**' **हिन्दू जीवन नियमों की गहरी दृष्टि लिए** '**वंशवृक्ष**' एवं आधुनिक भारत की आपकी कल्पना एवं व्याख्या '**तंतु**' में परिलक्षित हुई है। '**सार्थ**' में आपने आदिशंकर के समय में किये गए पुनसृष्टि के प्रयासों का प्रभावी वर्णन किया है। थोड़े शब्दों में कहा जाए तो आपने भारतीय मनीषा एवं अस्मिता को समर्थ रूप में शब्दांकित किया है। आपकी सर्जनात्मकता, विद्वता, गहन अध्ययन एवं जिज्ञासु वृत्ति ने साहित्य के क्षेत्र में आपको अभिनव विशिष्टता प्रदान की है। केन्द्रीय साहित्य अकादमी, कर्नाटक साहित्य अकादमी एवं अनेकों संस्थाओं से आप सम्मानित हो चुके हैं। आपने देश-विदेश की विस्तृत यात्राएं भी की हैं। आपके जीवन में अद्भुत सरलता एवं सादगी है तथा सर्वोपरि है राष्ट्र एवं समाज का हित।

कुमारसभा पुस्तकालय ने 1989 ई० में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ० केशव बलिराम हेडगेवार की जन्मशताब्दी के अवसर पर उनकी पुण्य स्मृति में यह सम्मान प्रारम्भ किया था। यह सम्मान प्रति वर्ष किसी ऐसे व्यक्ति को प्रदान किया जाता है जो इस राष्ट्र के सनातन विचार-दर्शन को जीवन के विभिन्न आयामों में सुप्रतिष्ठित करने हेतु प्रयासरत हो। 1990 ई० का प्रथम सम्मान संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकर (नागपुर) को तथा गतवर्ष का सम्मान प्रख्यात राष्ट्रवादी लेखिका एवं चिन्तक प्रो० कुसुमलता केडिया को प्रदान किया गया था।

–**महावीर बजाज,** मंत्री

माँ की ममता

'माँ' का तब होता है, एहसास
जब वो ना होती हमारे पास
"माँ-पुत्री" का रिश्ता भी माना गया कुछ खास
जब हम चलते थे घुटनों के बल
तब माँ ही साबित हुई हमारा सबल
हमारी हर छोटी-सी चोट को, माँ ने अपनी पीड़ा माना
नौ माह गर्भ में रखकर, हर कष्ट को माँ ने सहना जाना
परीक्षाएं हमारी होती है, पर चिन्ता माँ को है आती
हम-सब सोते बेफिक्र पर माँ को नींद पड़ी आती
हर सही-गलत को जाने वो, पर बनती वो अन्जान
हर-रात स्वयं कष्ट सहे, पर रखे हमारा ध्यान
आज भी सच्चे सुपुत्र ऐसी माँ को मानते भगवान।

–डा. प्रमोद अग्रवाल गोल्डी, नैनीताल रोड, हल्द्वानी

असली मां

नाटक '**विक्रम का न्याय**' का मंचन किया जा रहा था। दो स्त्रियों में विवाद था कि बच्चे की असली माँ कौन है और बच्चा किसे सौंपा जाए। महान न्यायाधीश विक्रमादित्य ने अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि बच्चे को दो टुकड़ों में बाँटकर दोनों स्त्रियों को एक-एक हिस्सा सौंप दिया जाए। इसके पहले कि सिपाही आगे बढ़ते, दर्शकों में से एक तीसरी स्त्री दौड़ती हुई मंच पर चढ़ गई और बच्चे को छीनकर नाट्यागृह से बाहर चली गई। नाटक में भी अपने बच्चे का अहित न देख सकने वाली वह तीसरी स्त्री बच्चे की असली मां थी।

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity .
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication- 29th June 2007
RNI Regd. No . 2868/68

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।
- पानी से पापड़ तक अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह में दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपने चाहिए।
- सजन-गोठ बन्द हो।
- नेग का कार्यक्रम एक ही होना चाहिए।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष ही वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की बनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२ बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७००००७

फोन - २२६८-०३१९

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319

To :